अध्याय 9

नए संसार के लिए परमेश्वर के नियम और वाचा

जहाज़ छोड़ते हुए, नूह दूसरे आदम की तरह आगे भेजा गया था। सम्पूर्ण सृष्टि पाप के कारण नष्ट कर दी गयी थी, परंतु नूह का अब भी परमेश्वर का स्वरूप धारण किए हुए था। परमेश्वर नूह और अन्य बचाए गए प्राणियों के द्वारा सभी जीवित प्राणियों के लिए एक नई शुरुवात करने जा रहा था।

नई सृष्टि के लिए ईश्वरीय प्रावधान (9:1-7)

[1]फिर परमेश्वर ने नूह और उसके पुत्रों को आशीष दी और उनसे कहा, "फूलो-फलो, और बढ़ो, और पृथ्वी में भर जाओ। [2]और तुम्हारा डर और भय पृथ्वी के सब पशुओं, और आकाश के सब पक्षियों, और भूमि पर के सब रेंगने वाले जन्तुओं, और समुद्र की सब मछलियों पर बना रहेगा: वे सब तुम्हारे वश में कर दिए जाते हैं। [3]सब चलने वाले जन्तु तुम्हारा आहार होंगे; जैसा तुम को हरे हरे छोटे पेड़ दिए थे, वैसा ही अब सब कुछ देता हूं। [4]पर मांस को प्राण समेत अर्थात लहू समेत तुम न खाना। [5]और निश्चय मैं तुम्हारा लहू अर्थात प्राण का पलटा लूंगा: सब पशुओं, और मनुष्यों, दोनों से मैं उसे लूंगा: मनुष्य के प्राण का पलटा मैं एक एक के भाई बन्धु से लूंगा। [6]जो कोई मनुष्य का लहू बहाएगा उसका लहू मनुष्य ही से बहाया जाएगा क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप के अनुसार बनाया है। [7]और तुम तो फूलो-फलो, और बढ़ो, और पृथ्वी में बहुत बच्चे जन्मा के उस में भर जाओ।"

आयत 1. परमेश्वर ने 1:28 में पाई गयी आरंभिक आशीष को पुनः दोहराते हुए, **नूह और उसके पुत्रों** के लिए अपनी आशीषों को अभिव्यक्त किया। हालांकि यहाँ पर आज्ञा संक्षिप्त में है, परंतु शब्द बिलकुल वैसे ही हैं: **"फूलो-फलो, और बढ़ो, और पृथ्वी में भर जाओ"** (देखें 8:17) बिलकुल इसी तरह की आशीष इस खंड के अंत में भी है, परंतु यह प्रसारित रूप में नज़र आती है (9:7)। प्रजनन या पृथ्वी पर भरने का उत्तरदायित्व बना हुआ है; पृथ्वी पर फिर से आबादी बढ़ाने कि आवश्यकता थी।

आयतें 2, 3. जानवरों के ऊपर मनुष्य के अधिकार को बार-बार दोहराने के बाद, परमेश्वर ने जानवरों को मारने और भोजन के रूप में ग्रहण करने के निर्देश दिए। क्या मनुष्य पूर्ण रूप से शाकाहारी था, या क्या जल प्रलय से पहले वह केवल उन्हीं जानवरों के मांस को खा सकता था जिन्हें परमेश्वर को बलिदान चढ़ाया गया हो? इसका कोई निश्चित उत्तर नहीं दिया जा सकता है (1:29, 30 पर टिप्पणी देखें)। दूसरी बात शायद प्रलय पूर्व रही दुनिया में अंतर्निहित मानी जा सकती है, परंतु यह पहली बार था जब परमेश्वर ने स्पष्टता से **सभी जीवित और चालित प्राणियों को मनुष्य को भोजन के रूप में दिया**, ठीक वैसे ही जैसे उसने अदन कि वाटिका में सभी **पेड़ पौधों** पर अधिकार दिया था (1:29)।

मनुष्य होने के नाते हमें **प्रत्येक पशु और पक्षियों में से कुछ को मारने और खाने का अधिकार प्राप्त है**, साथ ही साथ सभी **ज़मीन पर रेंगने वाले जीव और समुद्र की मछलियाँ भी**, प्राणी-जगत में एक मूल बदलाव देखने को मिलता है। प्रारंभ से ही मनुष्य को अपने से निचले जीव पर अधिकार दिया गया था (1:26-28), फिर भी यह अंश/वाक्य उससे अधिक गहरी बात की ओर इशारा करता है। इस समय के बाद से निचली जाती के जीव जंतु न केवल मनुष्य के सामने चौकस और बेचैन होंगे परंतु अब वह मनुष्य जाति से **डरे** हुए और **दहशत** में रहेंगे। यह नया संबंध उस संबंध से बहुत भिन्न था जो जीव जंतुओं का अदन में आदम के साथ (2:19, 20), और जहाज़ में नूह के साथ था (7:8, 9)।

इस लेख से दूसरा पेचीदा विषय यह खड़ा होता है कि क्या सचमुच जल प्रलय के पश्चात परमेश्वर ने मनुष्यों को "हर एक जीव जंतुओं" को भोजन के रूप में दिया। क्या उसने इन लोगों को न केवल शुद्ध जंतु, पक्षी, और रेंगने वाले कीड़े ग्रहण करने की अनुमति दी या उसकी भी जो बाद में मूसा की व्यवस्था के अनुसार "अशुद्ध" भोजन की गिनती में आते है (व्यव. 11:1-47)? चूंकि कहानी के प्रारंभ में शुद्ध जीव जंतु अशुद्ध जीव जंतु से अलग किए गए थे (7:2, 8; 8:20), इसलिए शायद इसी तरह का अंतर यहाँ भी माना जा सकता है। अगर परमेश्वर ने मनुष्यों के खाने लिए केवल शुद्ध जीव ठहराए थे न कि अशुद्ध, तब इस स्थिति में यह सोचना कि वह "सारे जीव जंतुओं" को मनुष्य को भोजन के रूप में देगा, कुछ अजीब प्रतीत होता है।

इसी तर्क के बने रहने हेतु, हमें नए नियम में पाए गए शुद्ध और अशुद्ध भोजन के कथन को भी समान दृष्टि से देखना होगा, इस बात की परवाह किए बिना कि मरकुस कहता है यीशु ने "उस ने सब भोजन वस्तुओं को शुद्ध ठहराया" (मरकुस 7:19) और पौलुस के कथन के अनुसार "क्योंकि परमेश्वर की सृजी हुई हर एक वस्तु अच्छी है: और कोई वस्तु अस्वीकार करने के योग्य नहीं; पर यह कि धन्यवाद के साथ खाई जाए" (1 तीमु. 4:4)। क्या हमें यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि शुद्ध और अशुद्ध भोजन के बीच का अंतर आज भी लागू होता है? बिलकुल नहीं, जल प्रलय के बाद अप्रतिबंधित भोजन के प्रति परमेश्वर के निर्देश के विषय में भी इस तरह का निष्कर्ष निकलना निराधार लगता है। व्यवस्था के

आने के पहले, प्रत्यक्ष रूप से शुद्ध और अशुद्ध जानवरों से जुड़ा किसी भी तरह का प्रतिबन्ध केवल बलिदान चढ़ाये जाने पर लागू होता था न कि आहार पर।

आयत 4. बाइबल में ये पहली बार हुआ था कि परमेश्वर ने **मनुष्यों को जीवन के साथ मांस खाने को मना किया**, वास्तविक अर्थ लहू के साथ। बाद में इस्राएलियों को बहुत सी जगहों पर, लहू ग्रहण न करने के विषय में स्पष्ट आदेश दिए गए है (लैव्य. 3:17; 7:26, 27; 17:10-14; व्यव. 12:15, 16, 20-24), और प्रेरितों के काम 15:29 में भी अन्य जातियों को भी इसी तरह का निर्देश दिया गया है। चूंकि केवल परमेश्वर ही जीवन दे सकता है, इसलिए जो मनुष्य प्रलय के बाद बच गए थे, वे जीवन का सम्मान करने के लिए मजबूर थे जिसे परमेश्वर ने सभी जीव जंतुओं में डाला था। इस सन्दर्भ में लहू जीवन के तुल्य है; इस कारण से, इसे खाना या पीना प्रतिबंधित किया गया था।

सम्पूर्ण प्राचीन पूर्वी क्षेत्र में इस तरह की मनाही का कोई अन्य समानांतर देखने को नहीं मिलता। व्यवस्था की अद्वितीयता इस बात का गहरा संकेत देती है कि यह किसी भी प्रारंभिक मूर्तिपूजक धर्म से उत्पन्न नहीं हुआ था, परंतु ईश्वरीय आदेश था।[1] यह वह नियम नहीं थे जो मात्र किसी विशेष जाति जैसे इस्राएलियों पर लागू होते परंतु यह सभी लोगों के लिए है, क्योंकि सभी नूह कि संतान है। परमेश्वर मानव जाति को लहू का प्यासा नहीं बनाना चाहता था, जैसा कुछ अन्यजाति प्राचीन काल में बन गए थे।[2] लहू खाना या पीना परमेश्वर का, जिसने सभी जीवों को जीवन दिया, का अनादर करने जैसा है। हालांकि मनुष्यों को परमेश्वर कि ओर से यह अनुमति थी कि वे जानवरों को भोजन कि तरह ग्रहण कर सकते है, पर उन्हें सारे जीव जंतुओं की सहीं देखभाल करना और निर्दयता से प्रताड़ित नहीं करने का भी आदेश था। परमेश्वर चाहता था कि मनुष्य प्राणी जगत पर अपना अधिकार रखें (भजन 8:3-8), परंतु उसे एक ईमानदार भंडारी की तरह परमेश्वर कि सृष्टि पर शासन करना था। केवल परमेश्वर को आधिपत्य प्राप्त है।

आयत 5. अगला कथन एक और ईश्वरीय निर्देश के साथ शुरु होता है जो मानवीय जीवन के विषय में है: परमेश्वर ने कहा, **"निःसंदेह मैं तुम्हारा लहू अर्थात प्राण लूंगा; सारे पशुओं और सारे मनुष्य से में उसे लूँगा ... मैं मनुष्यों का प्राण लूंगा।"** यह सुनने में अजीब लगता है की, परमेश्वर मनुष्यों और पशुओं दोनों को पर मृत्यु दंड का ईश्वरीय निर्णय सुनायेंगे, जबकि पशु नैतिक (तर्क करने कि क्षमता) प्राणी भी नहीं है। जो हो, चूंकि प्रलय पूर्व अत्यधिक उपद्रव पृथ्वी पर बढ़ गया था (6:11), और जिसमें स्पष्ट से रूप अर्थ हीन हत्याएं भी शामिल थीं, परमेश्वर नूह और उसके वंशजों को यह समझना चाहता कि वह इस तरह का आचरण सहन नहीं करेगा। मानव जीवन इतना पवित्र है कि वह मनुष्य और पशु दोनों से लेखा लेता है।

लेख तीन बार यह कहता है "मैं लूंगा" (उसे) और परमेश्वर सर्वनाम के प्रथम रूप का विषय वस्तु है। (प्रथम पुरुषवाचक सर्वनाम।) पहले परमेश्वर कहता है "मैं तुम्हारा लहू अर्थात प्राण लूंगा।" इस कथन का अर्थ यह है कि परमेश्वर דָּרַשׁ

(दाराश) "प्राण के बदले प्राण" लेगा।[3] इस सिद्धांत के अनुसार किसी व्यक्ति को मारना परमेश्वर के विरुद्ध काम करने के बराबर है, जिसने अपने स्वरूप में मनुष्य को रचा (1:26, 27; 5:1, 2; 9:6)।

मनुष्य और पशु दोनों, ही परमेश्वर इस ईश्वरीय शासन/आश्रय के अन्दर थे, क्योंकि मूसा की व्यवस्था में ज़िम्मेदार कर्मक बार-बार दोहराया गया है। व्यवस्था ने एक बैल का उदाहरण दिया जिसे "सींग मारने की आदत थी," अगर उसका स्वामी उसकी इस आदत से परिचित है तो उसे उस बैल को बाँध कर रखना होगा। अगर बैल का स्वामी ऐसा करने में असफल रहा और उस बैल ने किसी की हत्या कर दी, तब बैल और उसका स्वामी भी मार डाला जाए (निर्गमन 21:29)।

हर व्यक्ति का भाई, इस कथन का क्या तात्पर्य है? प्रस्तुत भाषा हो सकता है कि प्रथम हत्या की ओर संकेत कर रही हो, जिसमें कैन ने अपने भाई हाबिल को घात किया था (4:8) इसके साथ-साथ यह विचार भी हो सकता है कि हम सभी मानव परिवार का अंग है।[4] दूसरी बात को यदि माना जाये तो कुछ अनुवाद ऐसा मानते है कि "हर व्यक्ति का भाई" का अर्थ किसी का "साथी या मित्र हो सकता है" (NIV; ESV)। NLT कहता है "कोई भी जो अपने साथी मानव कि हत्या करे, उसे भी मर जाना चाहिए" दूसरी व्याख्या यह कहती है "हर व्यक्ति का भाई" लहू का पलटा, इसका शुरुवाती संकेत है, जो अपने भाई के हत्यारे को मार कर न्याय का निष्पादन करेगा। (देखें गिनती 35:9-34; व्यव. 19:1-13)।

आयत 6. यह आयत, अपराध के लिए दंड को उपयुक्त ठहराते हुए ये कहती है **"जो कोई मनुष्य का लहू बहाएगा उसका लहू मनुष्य ही से बहाया जाएगा।"** उत्पत्ति 37:22 में जो भाव "लहू बहाने" का इस्तेमाल हुआ है वह पहले से सोची समझी की गयी हत्या को दर्शाता है, जहाँ रुबेन अपने भाइयों से विनती करता है कि वह यूसुफ को न मारे (देखें 1 राजा 2:31; यहेज. 22:4)। बाइबल में हत्या को इतने जघन्य और घृणित पाप के रूप में देखा गया है कि हत्यारे के विषय में ईश्वरीय आज्ञा यह है कि वह भी मार डाला जाये। यह वचन कई तरह के प्रश्नों को खड़ा करता है: अगर हत्यारे को सज़ा के रूप में एक मनुष्य के द्वारा ही मृत्यु दंड मिले तो क्या हत्यारे का लहू बहाने वाला भी हत्यारे की श्रेणी में नहीं आएगा? विरोध के बावजूद, इसका उत्तर "ना" है। मृत्यु दंड हत्या नहीं है, जबतक की कोई नियम या व्यवस्था अपने हाथों में लेकर व्यक्तिगत रूप से बदला लेने की चेष्टा न करे।

हत्यारे के ऊपर दंड की आज्ञा पर अभिनीत या अमल करना व्यक्तिगत मामला नहीं है। बल्कि परमेश्वर ने इसे समाज के लिए एक दायित्व के रूप में दिया है। हमें यह नहीं बताया गया है कि इतिहास के पितृसत्तात्मक या पुरुष प्रधान समाज में इसे कैसे निभाया जाता था परंतु मूसा की व्यवस्था के दौरान इसे कैसे स्थापित किया गया था इसका हमें ज्ञान है। अचानक या गलती से हो गयी हत्या के मामले में, परमेश्वर की व्यवस्था "लहू का पलटा" (निकट सम्बन्धी)

से सुरक्षा देती थी। इस तरह का मुकदमा "शरण नगर" के पुरनियों द्वारा सुना जाये और अगर दोषी व्यक्ति पर पहले से ठान कर हत्या का दोष साबित हो तब उसे मृत्यु दंड दिया जाए (निर्गमन 21:12-14; गिनती 35:9-34; व्यव. 19:1-13)। मसीह की व्यवस्था में भी इसी तरह का नियम लागू होता है। रोमियों को लिखी गयी अपनी पत्री में पौलुस ये कहता है कि नागरिक या घरेलू सरकार को यह अधिकार है कि वह "जो बुराई करे" उस पर दंड की तलवार चला सकता है (रोमियों 13:4)। यहाँ तक कि पौलुस ने स्वयं के लिए भी कैसर को दंड देने का अधिकार दिया, यदि वह अपराधी है और "मार डाले जाने योग्य कोई काम" किया है तो। (प्रेरितों 25:11)

दूसरा प्रश्न यह उठता है: परमेश्वर क्यों यह चाहता है कि हत्यारे को मार डाला जाये? ऊपरी तौर पर इसका उत्तर हो सकता है, कि क्योंकि मानव जीवन परमेश्वर की रचना का हिस्सा है इसलिए यह पवित्र है। हालांकि यह बात सत्य है कि मनुष्य ने संयोग या अचानक से चेतना हासिल नहीं की है, इस तरह का विचार बहुत लम्बे समय तक नहीं बना रह सकता। गैर कानूनी हत्या के पीछे गहरा कारण यह है कि मानव जीवन पृथ्वी के अन्य सभी जीवों से गुणात्मक रूप से भिन्न है। परमेश्वर यह आदेश देता है कि एक व्यक्ति अगर हत्या का दोषी है तो वह स्वयं अपने जीवन पर अधिकार खो बैठेगा क्योंकि मनुष्य अकेला ऐसा प्राणी है जी पृथ्वी पर परमेश्वर के अनुरूप है। जब लोग मनुष्य में **परमेश्वर की छवि** को नहीं देखते, तो वे **मनुष्यों** के साथ जानवरों के सामान बर्ताव करते हैं और उनके लिए जीवन का कोई मोल नहीं रहता। इस तरह की प्रवृत्ति क्रूरता और व्यापक हत्याओं की तरफ ले जाती है, क्योंकि यह मानव व्यक्तित्व या परमेश्वर के प्रति, जिसने मनुष्य को उसकी प्रतिष्ठा दी थी, सारे आदर सम्मान को मिटा देती है।

इस तरह की सोच के साथ भी एक विरोधाभास उत्पन्न होता है। एक तरफ चूंकि परमेश्वर रचयिता और एक मात्र जीवन देने वाला है, इसलिए इसके साथ यह भी तय है कि केवल उसे ही जीवन लेने का अधिकार है। दूसरी तरफ जब परमेश्वर मनुष्य को हत्या का दंड देने का आदेश देता है, वह वास्तव में वह उसे अधिकार सौंपता है। इस तरह दंड देने वाला, बुराई करने वालो को दंड देने के लिए,परमेश्वर का चुना हुआ पात्र है और उसपर कोई दोष नहीं।

आयत 7. इस लेख का पहला भाग 9:1 की आज्ञा को दोहराने के साथ और प्रोत्साहन के कुछ सुंदर वचनों के साथ समाप्त होता है। परमेश्वर ने कहा "**फूलो-फलो, और बढ़ो, और पृथ्वी में बहुत बच्चे जन्मा के उस में भर जाओ।**" जो लोग दानव काल में रहते हुए उत्पात मचाते थे उनकी तुलना में प्रलय के बाद बचे हुए लोगों की जीवन शैली सुस्पष्ट और उज्ज्वल है (6:4)। प्रलय के पहले के हत्यारों की अपेक्षा, जिन्होंने जीवन को नष्ट किया, नूह और उसका परिवार जीवन के वाहक और प्रचारक हुए, जैसे सृष्टि के आरम्भ में आदम और हव्वा थे (1:28)।

9:7 में दी गयी आज्ञा बहुवचन सर्वनाम से शुरु होती है, जिस वजह से आरंभिक वाक्य का अनुवाद **तुम्हारे लिए** के रूप में हुआ है। यह प्राथमिक रूप से नूह के पुत्रों पर प्रकाश डालती है क्योंकि यही लोग थे जो आने वाली पीढ़ी और

राष्ट्रों के पिता होंगे और पृथ्वी की आबादी पुनः बढ़ाएंगे, जैसा वंशावली में प्रगट है (10:1-32)।

एक ईश्वरीय वाचा और चिन्ह (9:8-17)

वाचा (9:8-11)

8फिर परमेश्वर ने नूह और उसके पुत्रों से कहा, 9"सुनो, मैं तुम्हारे साथ और तुम्हारे पश्चात जो तुम्हारा वंश होगा, उसके साथ भी वाचा बान्धता हूं। 10और सब जीवित प्राणियों से भी जो तुम्हारे संग है क्या पक्षी क्या घरेलू पशु, क्या पृथ्वी के सब बनैले पशु, पृथ्वी के जितने जीव जन्तु जहाज़ से निकले हैं; सब के साथ भी मेरी यह वाचा बन्धती है। 11और मैं तुम्हारे साथ अपनी इस वाचा को पूरा करूंगा; कि सब प्राणी फिर जलप्रलय से नाश न होंगे; और पृथ्वी के नाश करने के लिये फिर जलप्रलय न होगा।"

आयत 8. नूह और उसके परिवार के जहाज़ के अन्दर जाने के पहले परमेश्वर ने उनसे प्रतिज्ञात्मक वाचा बंधी (6:18)। उसने उनसे प्रतिज्ञा कि वह उन्हें सामने खड़े जल प्रलय से बचाएगा। यह काम उसने किया, परंतु उसकी प्रतिज्ञाओं में और भी बहुत कुछ शामिल था।

नूह और उसके पुत्रों को यह बताने के बाद कि जब नई स्वच्छ और पवित्र सृष्टि में कदम रखेंगे तो उन्हें क्या-क्या विशेषाधिकार या सुविधाएं प्राप्त होंगी एवं किस-किस बात की मनाही होगी, **परमेश्वर** एक नए विषय की ओर मुड़ता है। उनके लिए और अनुशासन और चेतावनियों के बजाय, परमेश्वर उन्हें उन कार्यों के विषय में बताता है जो वह उनके बदले करने जा रहा था।

आयत 9. परमेश्वर यह घोषणा करता है कि वह קוּם *(कुम)* या अपनी **वाचा** को उनके और उनके **वंशज** के साथ **स्थापित** किया या[5] "पक्की" करने जा रहा था। इब्रानी शब्द *(कुम)* कारण वाचक रूप में है जिसका यथाशब्द अर्थ है "स्थिर करना" या स्थापित करना।[6] इसका यह अर्थ हो सकता है कि परमेश्वर या तो जहाज़ के रहने वालों के साथ एक नया संबंध (वाचा) स्थापित करेगा या, ज्यादा संभावना इस बात की है कि वह आरम्भिक वाचा में की गयी प्रतिज्ञा को पूरी करे, उसे लागू करे या आगे बढ़ाए जो उसने 6:18 में नूह से की थी।

आयतें 10, 11. इस वाचा के अंतर्गत सारे पक्षी, पशु, और पृथ्वी पर पाए जाने वाले सभी जीव जंतु और वह सभी जानवर जो जहाज़ से निकले, आयेंगे। परमेश्वर की ये प्रतिज्ञा थी कि अब से फिर जलप्रलय से प्राणी नाश न होंगे: और पृथ्वी के नाश करने के लिये फिर जलप्रलय न होगा।

यह एक तरफ़ा होगा, अर्थात इस वाचा का पालन करने कि ज़िम्मेदारी परमेश्वर पर होगी। भले ही मनुष्य भविष्य में कितना भी पापी क्यों न हो जाये (देखें 8:21), परमेश्वर पृथ्वी को नाश करने के लिए अब कभी जल प्रलय नहीं

भेजेगा। दूसरे शब्दों में, यह वाचा शर्त रहित है, चाहे मनुष्य जो भी करे यह वाचा रद्द नहीं की जा सकती। दूसरी तरफ अगर मनुष्य लम्बा जीवन चाहता है और पृथ्वी पर भर जाना चाहता है, अगर वह बोने और काटने और अन्य आशीषों (8:22; 9:1, 7), का आनंद लेना चाहता है तो, उसे सभी प्रतिबंधित कार्यों खुद को बचाना होगा। जो लोग लहू खाते और हत्यारे है, वे इस बुराई से स्वच्छ की गई सृष्टि के नहीं हैं (देखें 9:4-6)। आने वाले भविष्य में ईश्वरीय न्याय की संभावना बनी हुई है, पर बेशक वह ईश्वरीय न्याय जल प्रलय के रूप में नहीं होगा।

चिन्ह (9:12-17)

12फिर परमेश्वर ने कहा, "जो वाचा मैं तुम्हारे साथ, और जितने जीवित
प्राणी तुम्हारे संग हैं उन सब के साथ भी युग युग की पीढ़ियों के लिये बान्धता हूं;
उसका यह चिन्ह है: 13कि मैं ने बादल में अपना धनुष रखा है वह मेरे और पृथ्वी
के बीच में वाचा का चिन्ह होगा। 14और जब मैं पृथ्वी पर बादल फैलाऊं जब
बादल में धनुष देख पड़ेगा। 15तब मेरी जो वाचा तुम्हारे और सब जीवित
शरीरधारी प्राणियों के साथ बान्धी है; उसको मैं स्मरण करूंगा, तब ऐसा
जलप्रलय फिर न होगा जिस से सब प्राणियों का विनाश हो। 16बादल में जो
धनुष होगा मैं उसे देख के यह सदा की वाचा स्मरण करूंगा जो परमेश्वर के और
पृथ्वी पर के सब जीवित शरीरधारी प्राणियों के बीच बन्धी है। 17फिर परमेश्वर
ने नूह से कहा जो वाचा मैं ने पृथ्वी भर के सब प्राणियों के साथ बान्धी है, उसका
चिन्ह यही है।"

आयतें 12, 13. नूह और उसके परिवार ने, जल प्रलय भेज कर बुराई का अंत करने वाली परमेश्वर की अद्‌भुत सामर्थ्य को देखा और ऐसे विनाशकारी प्रलय से बचने के द्वारा व्यक्तिगत रूप से उसके अनोखे अनुग्रह का अनुभव भी किया। उनके लिए परमेश्वर की ये वाचा ही काफी थी वह अब कभी इस तरह के विनाश को नहीं दोहराएगा। चूंकि आने वाली **पीढ़ी** की प्रतिक्रिया अलग हो सकती है इसलिए परमेश्वर ने इस **वाचा** को एक **चिन्ह** से सुनिश्चित किया (देखें 9:17) उसने कहा वह **आकाश में एक धनुष रखेगा।**

आयतें 14, 15. चूंकि **धनुष** शब्द קֶשֶׁת *(केशेत)* धनुर्विद्या और मेघधनुष[7] दोनों से जुड़ा हुआ है इसलिए कुछ विद्वान यह सुझाव देते है कि यह चित्र परमेश्वर को योद्धा के रूप में प्रस्तुत करता है (निर्गमन 15:3; यशा. 42:13; सप. 3:17) जो अपने दुश्मनों पर शक्तिशाली धनुष और तीर से या बिजली से वार करता है (भजन 7:13; 18:14; हबक्कूक 3:11)। वे सुझाव देते है कि प्रलय के बाद, परमेश्वर अपना धनुष **बादल पर लटका** कर यह आश्वस्त करता है कि वह **दोबारा विनाशकारी जल प्रलय** से पृथ्वी को नाश नहीं करेगा। तब भी बाइबल या किसी बाहरी सूत्रों में हमें नूह के समय से बहुत बाद तक भी इस तरह के धनुष के चिन्ह का कोई आलेख नहीं मिलता है।[8] यह संदेहजनक लगता

है, इसलिए हमें धनुष के बारे में नूह को जितना प्रगट किया गया था उससे बढ़कर धनुष के महत्व पर बल नहीं देना चाहिए। प्रलय के सन्दर्भ में, यह युद्ध में विजय का प्रतीक नहीं है, परंतु ये परमेश्वर के अनुग्रह का चिन्ह है, एक अनुस्मारक कि परमेश्वर अपनी वाचा का पालन करने में विश्वासयोग्य है और **वह जल के द्वारा मानव जाति का विनाश नहीं करेगा।**

आयत 16. यह कथन कि **परमेश्वर अपनी अनंत वाचा कब स्मरण करने के लिए आकाश में एक धनुष ठहराएगा** ... परमेश्वर और उसकी प्रजा के मध्य एक संबंध को दर्शाती है, इस शब्द "स्मरण" זָכַר *(ज़कार)* का अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर अपनी वाचा को भूल जाने का खतरा है और उसे याद रखने के लिए बादल में एक चिन्ह की आवश्यकता है। बल्कि ये मेघधनुष मनुष्यों को आश्वस्त करता है कि परमेश्वर उनके बदले में अपनी "वाचा के प्रति विश्वासयोग्यता दिखायेगा।"[9]

उत्पत्ति 19:29 कहता है "परमेश्वर ने अब्राहम को याद किया" अर्थात अपनी वाचा को जो उसने इब्राहिम के वंश से बाँधी थी याद किया, जब उसने सदोम और अमोरा की आग और विनाश से लूत को बचाया। आगे भी परमेश्वर मूसा से कहता है कि इस्राएलियों से कह कि उसने अपनी "वाचा को स्मरण" किया है, और नीचे आ गया है ताकि "मिस्र की बंधुवाई" से उन्हें छुड़ा सके (निर्गमन 6:5-7)। वैसे ही, नूह की कहानी में, परमेश्वर का स्मरण करना महत्वपूर्ण है, और यह दूसरी बार है जब वंश का हिसाब इस पर अटक गया था। 8:1 में, जब उसने प्रलय के जल को सही समय में घटाया ताकि पृथ्वी फिर से आबाद की जाये तब, वचन कहता है "परमेश्वर ने नूह को याद किया" (ज़कार)। परमेश्वर के द्वारा नूह को स्मरण किया जाना और बादलों में मेघधनुष ने उसे और सभी आने वाली पीढ़ी को यह आश्वासन दिया कि परमेश्वर अपनी वाचा और प्रतिज्ञाओं के प्रति विश्वासयोग्य है। उसकी वाचा उसके चरित्र में जड़ित है।

आयत 17. मेघधनुष एक वाचा का चिन्ह होगा जो परमेश्वर ने [स्वयं] और पृथ्वी के सभी प्राणियों से बाँधी है। यह शब्द "चिन्ह" אוֹת *('ओथ)* जो यहाँ पर इस्तेमाल हुआ है वह और भी कई जगहों पर पाया जाता है, विशेषकर मिस्र में, जंगल में, और कनान की भूमि पर विजय मिलने में, जहाँ परमेश्वर ने कई आश्चर्यकर्म किए। (निर्गमन 7:3; गिनती 14:11, 22; व्यव. 4:34; 11:3; यहोशू 24:17, 18)। *(ओथ)* का अचमत्कारी अर्थ भी कई विशेष कार्यों में नज़र आता है, जैसे कि खतना (उत्पत्ति 17:11), निर्गम के बाद इस्राएलियों का सीनै पर्वत पर परमेश्वर की आराधना करना (निर्गमन 3:12), इस्राएलियों का मिस्र में अपने घरों के दरवाजों पर मेमने का लहू लगाना (निर्गमन 12:7, 13), सब्त (निर्गमन 31:16, 17),भविष्यवक्ताओं द्वारा बहुत से प्रतीकात्मक कार्य (यशा. 20:3; यहेज. 4:3)।

चिन्हों की हमेशा परमेश्वर के प्रकटीकरण के रूप में ही व्याख्या की जानी चाहिए ताकि परमेश्वर के लोग उसके महत्व को समझे। "जब तक समरूपी शब्द प्रकटीकरण के रूप में चिन्ह की व्याख्या नहीं की जाति तब तक कोई चिन्ह

प्रकटीकरण नहीं है।"[10] चिन्ह चाहे चमत्कारी हो या अचमत्कारी वे परमेश्वर की उपस्थिति और उद्देश्य की तरफ इशारा करते है, और कभी-कभी यह मनुष्यों को सौंपा गया का ईश्वरीय दायित्व भी होता है। मेघधनुष के मामले में, यह एक अनुस्मारक है, जो परमेश्वर और हर एक जीवित प्राणी के मध्य एक वाचा का चिन्ह है, कि भविष्य में वह कभी भी जल प्रलय से पृथ्वी और उसके रहने वालों को नाश नहीं करेगा जैसे उसने नूह के समय में किया था। मेघधनुष, आने वाली पीढ़ी और विशेषकर अस्थाई न्याय के खतरे (बंधुवाई, और शहादत) में पड़े लोगों के लिए जो बाद में पृथ्वी पर आए उसके लिए परमेश्वर की दया और अनुग्रह का एक प्रतीक बन गया (देखें यहेज. 1:28; प्रका. 4:3; 10:1)।

परमेश्वर अपने मेघधनुष को ... बादलों पर एक अनंत वाचा के "चिन्ह" की तरह दिखाता है (9:16) है इसका यह अर्थ नहीं है की नूह के जहाज़ से निकलने के पहले कभी कोई मेघधनुष नहीं दिखाई दिया। इसका महज़ यह अर्थ है कि परमेश्वर ने मेघधनुष पर महत्त्व दिया जो पहले नहीं दिया गया था। ऐसी ही एक स्थिति अब्राहम की कहानी में भी पायी जाती है। विश्वासियों का पिता जब बहुत साल परमेश्वर के चल चूका, तब परमेश्वर ने उसे और उसकी संतान ... और आगे की पीढ़ियों को खतना का चिन्ह दिया (17:9-14)। पुरातात्त्विक प्रमाण इस बात का संकेत देते है कि इस तरह कि मांस का एक हिस्सा काटने की क्रिया इब्राहिम के बहुत पहले से अन्य लोगों में पौरुष में प्रवेश करने की विधि के रूप में की जाती थी।[11] जब अब्राहम का खतना हुआ तब वह निन्यानवे वर्ष का था, फिर भी यह परमेश्वर और उसके लोगों के मध्य वाचा का शारीरिक चिन्ह बन गया।

इसी तरह, जब इस्राएलियों को सीनै पर्वत पर सब्त के दिन की आज्ञा मिली, उस वाचा के चिन्ह *(ओथ)* ने एक नया अर्थ प्राप्त किया बना जो परमेश्वर ने उसके साथ बाँधी थी (निर्गमन 31:16, 17), हालाँकि उन्हें जंगल में भी इसका पालन किया था (निर्गमन 16:22-30)। कुछ ऐसा ही हुआ होगा कि अब्राहम और इस्राएल के पहले, परमेश्वर ने नूह और उसके बाद समस्त मानव जाति के लिए मेघधनुष को एक अर्थपूर्ण वाचा के चिन्ह *(ओथ)* के रूप में परिवर्तित किया। इसलिए कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं का पक्का है, वह फिर कभी जल प्रलय जैसे विनाशकारी ढंग से पृथ्वी और उसमें रहने वाले जीवित प्राणियों को पुनः नाश नहीं करेगा।

नूह का श्राप और आशीष (9:18-29)

यहाँ तक की परमेश्वर की नई सृष्टि को बने ज्यादा समय भी नहीं हुआ था कि मनुष्य अपने अन्दर अधार्मिकता और अन्याय को विकसित करके वापस पाप में पड़ गया। अब पृथ्वी फिर से भर गयी थी, वह पहले जैसी थी वैसे ही बढेगी, लोगो को प्रति दिन अच्छाई और बुराई धार्मिकता और पाप के बीच में चुनाव का सामना करना होगा।

नूह की वंशावली (9:18, 19)

[18]नूह के जो पुत्र जहाज़ में से निकले, वे शेम, हाम, और येपेत थे: और हाम तो कनान का पिता हुआ। [19]नूह के तीन पुत्र ये ही हैं, और इनका वंश सारी पृथ्वी पर फैल गया।

आयत 18. जल प्रलय की कहानी नूह और उसके तीन पुत्र के सन्दर्भ के साथ प्रारंभ होती है: "शेम, हाम, येपेत" (6:9, 10) और कुछ उसी तरह, वह कुलपति और उसकी संतान के बारे में एक अन्य कथन के साथ समाप्त होती है। **अब नूह के तीन पुत्र शेम, हाम, येपेत थे जो जहाज़ से बाहर निकले थे। कहानी आगे बताती है कि हाम कनान का पिता हुआ**, जिसको 9:25 में नूह के द्वारा श्राप दिया गया। कनान के विषय में कही गयी बात, अब्राहम की संतान (इस्राएल) और प्रतिज्ञा के देश में कनानियों के मध्य भावी संघर्ष का, पूर्वानुमान है।

आयत 19. जब लेखक "नूह के पुत्रों" के विषय में बोलता है, तब वह इस बात की भी पुष्टि करता है कि **सारी पृथ्वी उनके द्वारा भर गई है**। इस परिवार की वृद्धि, ईश्वरीय आशीष उनके जीवन में क्रियाशील है इसको दर्शाती है, वह आशीष जिसमें "फलो फूलो और पृथ्वी पर भर जाओ" (9:1) वाली आज्ञा भी शामिल है।

नूह का अविवेकपूर्ण कार्य (9:20, 21)

[20]और नूह किसानी करने लगा, और उसने दाख की बारी लगाई। [21]और वह दाखमधु पीकर मतवाला हुआ; और अपने तम्बू के भीतर नंगा हो गया।

आयत 20. जल प्रलय के बाद यह आवश्यक था कि **नूह** अपने और अपने परिवार के भरण पोषण करे, इसलिए **उसने किसानी शुरु कर दी और दाख की बारी लगाईं**। इब्रानी लेख का यथाशब्द अनुवाद ऐसा है "और नूह, भूमि के मनुष्य, ने *आरंभ* किया और एक दाख की बरी लगाईं" (ज़ोर दिया गया)।[12] RSV द्वारा इस तरह से अनुवाद किया गया है "नूह पहला भूमि पर खेती करने वाला हुआ," जबकि अन्य अनुवाद कहते है "नूह पहला व्यक्ति था जिसने दाख की बारी लगाईं" (NRSV; NJPSV)। *इब्रानी अध्ययन बाइबल कहती है* कि नूह "प्रथम ऐसा मनुष्य था जिसने दाख की बारी लगाईं और उसे इस बात का ज्ञात नहीं था कि अत्यधिक दाख मधु [शराब] सेवन के क्या दुष्परिणाम हो सकते है।"[13]

यह देखना कठिन है कि नूह "प्रथम भूमि जोतने वाला था" क्योंकि आदम और कैन सृष्टि के आरम्भ से ही ऐसा करते आ रहे थे (2:15; 3:17-19; 4:2, 3)। इसके साथ-साथ आयत कहीं भी यह नहीं कहती कि नूह "दाख की बारी लगाने वाला प्रथम व्यक्ति था।"[14] ऐसा प्रतीत होता है कि इस तरह की व्याख्या केवल नूह के मतवालेपन को नजरंदाज करने और उसे उसके खराब आचरण से विमुक्त

करने के लिए किया गया है। सृष्टि से अभी तक के बीते लम्बे समय को देख कर यह कुछ अजीब लगता है कि नूह के समय तक पेय पदार्थ के रूप में दाख मधु की खोज नहीं हुई थी। एक ज्यादा संभव लगने वाली व्याख्या ये है कि "नूह एक ऐसे पौधे को उपजाना और इस्तेमाल करना आरम्भ करता है जिसके बारे में वह पहले से जानता था।"[15]

आयत 21. हालांकि नूह एक धर्मी व्यक्ति था जो परमेश्वर के साथ चलता था, फिर भी हमें ये नहीं सोचना चाहिए कि वह पाप से ऊपर था। पवित्र शास्त्र इस बात को स्पष्ट करता है कि **उसने दाख मधु पिया और मतवाला हो गया। अपने मतवालेपन में नूह तम्बू की भीतर निर्वस्त्र हो गया। हमें यह नहीं बताया गया है कि अपने तम्बू में नंगा क्यों हुआ।** प्राचीन पूर्वी और भूमध्यसागरीय के आसपास के क्षेत्रों में ग्रीष्म काल में वस्त्र उतार के सोना कोई असामान्य कार्य तो नहीं होना चाहिए[16] (प्रका. 16:15) नूह का नंगापन प्रत्यक्ष रूप से भिन्न था। कुछ ऐसी अटकले लगाते हैं कि वह अपनी पत्नी के साथ यौन संबंध बनाने की तैयारी कर रहा था या दाख मधु ने उसके सोचने समझने और निर्णय लेने की क्षमता को बिगाड़ दिया था, जिसके कारण वह ऐसे अशोभनीय ढंग से व्यवहार करने लगा।

हाम का पाप (9:22, 23)

[22]तब कनान के पिता हाम ने, अपने पिता को नंगा देखा, और बाहर आकर अपने दोनों भाइयों को बतला दिया। [23]तब शेम और येपेत दोनों ने कपड़ा ले कर अपने कन्धों पर रखा, और पीछे की ओर उलटा चलकर अपने पिता के नंगे तन को ढांप दिया, और वे अपना मुख पीछे किए हुए थे इसलिये उन्होंने अपने पिता को नंगा न देखा।

आयत 22. एक बार फिर हाम को कनान के पिता के रूप में पहचाना गया है (देखें 9:18), जैसा लिखा है कि उसने अपने पिता को नंगा देखा। प्रत्यक्ष रूप से उसका उसके पिता के तम्बू में जाने का कोई अभिप्राय नहीं था। क्या उसे शंका थी की बाड़े के उस तरफ कुछ गड़बड़ है? क्या वह सिर्फ जिज्ञासापूर्ण था, या क्या वह जानबूझकर अपने पिता की परिस्थिति को खुद अपने मनोरंजन के लिए इस्तेमाल करना चाह रहा था? हम किसी भी तरह से यह नहीं जान सकते कि तम्बू के भीतर जाने के पीछे हाम का क्या उद्देश्य था, क्योंकि पवित्र शास्त्र इस विषय में शांत है। हम इस बात को जानते है कि आदम और हव्वा के पाप में गिरने के तुरंत बाद उन्हें अपने नंगेपन पर लाज आई (3:7, 10)। बाद में व्यवस्था में भी, याजक को इस तरह का अनुचित प्रदर्शन न करने की चेतावनी दी गयी है (निर्गमन 20:26; 28:42)। कौटुम्बिक व्यभिचार के लिए क़ानून में भी, पति पत्नी के अलावा किसी को भी किसी के नंगे बदन को उघाड़ने (यौन अंग) की सीधे तौर पर मनाही है (लैव्य. 18:6-18)।

हाम के पाप से सम्बंधित कुछ और विचार भी प्रस्तावित किए गए है। कुछ का कहना है कि उसका उद्देश्य अपने पिता के साथ गुदा मैथुन करना था। कुछ का यह भी विचार है कि वह अपनी माता के साथ सहवास करना चाहता था; इस विचार के समर्थक लैव्यव्यवस्था 18:7 की ओर इशारा करते है। जब यह लेख "पिता के तन को न उघाड़ना" का क़ानून बनाता है तब वास्तव में ये मनाही अपनी माता के साथ यौन संबंध स्थापित करने के विरोध में है। यह सारे अनुमान कुछ ... जान पड़ता है; वचन सीधे शब्दों में यह कहता है की जब "हाम ने, अपने पिता को नंगा देखा, और बाहर आकर अपने दोनों भाइयों को बतला दिया।"

यह वृत्तांत यह नहीं बताता है कि हाम ने अपने भाइयों से क्या कहा और किस लहज़े में इस घटना का बयान किया। क्या वह अपने भाइयों को भी पिता के नंगे तन को देखने और वासनापूर्ण दर्शन के लिए लुभा रहा था?[17] क्या वह अपने पिता के अनुचित मतवालेपन का ठट्ठा कर रहा था? हाम ने जो भी अपने भाइयों से कहा, वह शायद ठट्ठा की रीति के कहा जो उसके बूढ़े पिता के लिए अपमान और उपहास का कारण था। निःसंदेह हाम के मन में शायद अपने पिता के इस कमज़ोर क्षण के लिए किसी प्रकार का कोई संवेदन और आदर नहीं था। बाद में, हबक्कूक नबी उनको फटकार लगाता है जो दूसरों को मतवाला कर देते है कि "उसको नंगा देखे" (हबक्कूक 2:15)। हालांकि इस बात का कोई ज़िक्र नहीं है की हाम ने अपने पिता को मदिरा में डूब जाने के लिए प्रोत्साहित किया, पर ऐसा प्रतीत होता है कि उसने अपने पिता के नंगेपन को देखकर उसका अपमान किया और दुखद स्थिति का फायदा उठाया। इसके अतिरिक्त, अपने भाइयों को इस बारे में बता कर और शायद उन्हें भी इस अपमान जनक दृश्य को देखने का निमंत्रण देने के द्वारा उसने इस पाप को और बड़ा कर दिया।

हालांकि पवित्र शास्त्र हाम के पाप की प्रवृत्ति का कोई सटीक स्पष्टीकरण नहीं देता, लेकिन फिर भी अपने पिता के प्रति उसका व्यवहार बिल्कुल अनुचित था। प्राचीन काल और आज के भी कई पारंपरिक समाज में बच्चों का यह कर्तव्य है की वे अपने माता पिता का आदर करें। परमेश्वर ने इस अवधारणा को दस आज्ञा में भी सम्मिलित किया है। अपने माता पिता का "आदर" करना (निर्गमन 20:12)। और प्रतिज्ञा के देश में इस्राएल के लिए कुछ व्यवहार निर्देश देते हुए मूसा ने भी अपने माता पिता अनादर करने वालों को शापित कहा है। इन निर्देशों के बाद सभी को अपनी सहमति देते हुआ "आमीन" कहना था (व्यव. 27:16)।

पुराना नियम इस विषय में कुछ नहीं कहता कि जब माता पिता अनुचित ढंग से व्यवहार करें तब बच्चों को किस तरह की प्रतिक्रिया देनी चाहिए, पर इस्राएली शायद युगारिटिक अखत एपिक (युगैरिटिक अखत महाकाव्य) से सहमत होंगे, जो ये कहते है कि पुत्र अपने पिता को "हाथ पकड़ के ले जाता है, जब वह नशे की हालत में हो, उसे उठता है जब वह मदिरा संतृप्त हो"।[18] दूसरे शब्दों में एक विश्वासयोग्य पुत्र अपने पिता को स्थिर और उसकी सहायता करेगा जब वह मदिरा के नशे में अनुचित व्यवहार करे, और वह अपने पिता को

उपहास करनेवालों से कहीं दूर या एकांत में ले जाकर उसकी लोक छवि की रक्षा करेगा।

आयत 23. शेम और येपेत अपने भाई द्वारा किए जा रहे कार्य में भाग नहीं लेंगे परन्तु उन्होंने एक भद्दे और अधार्मिक कार्य को होने से किसी तरह रोकने का प्रयास किया। दोनों ने कपड़ा ले कर अपने कन्धों पर रखा, और पीछे की ओर उलटा चलकर अपने पिता के नंगे तन को ढांप दिया, और वे अपना मुख ... पीछे किए हुए थे ताकि वे अपने पिता को नंगा न देखा। हाम के पाप का गठन कैसे हुआ होगा इस पर बहुत सी राय प्रस्तुत होने के बावजूद आलेख सिर्फ इतना कहता है उसने अपने पिता को नंगा और मतवाला "देखा"; उसके भाइयों ने पिता को उस दशा में "नहीं देखा।" उन्होंने सावधानी बरती कि अपने पिता को न देखें; और वे पिता के तन को ढापने के लिए पीछे की तरफ उलटा चल कर गए ताकि गलती से भी उसे न देखे। नूह को बिना देखे उन्होंने उसके नंगेपन को ढांपा, और इसके द्वारा शेम और येपेत ने उसका आदर किया और पिता की मर्म स्थिति पर दूसरो की कुदृष्टि पड़ने की संभावना को भी दूर कर दिया।

हाम की संतान, कनान को नूह का श्राप (9:24, 25)

[24]जब नूह का नशा उतर गया, तब उसने जान लिया कि उसके छोटे पुत्र ने उससे क्या किया है। [25]इसलिये उसने कहा, कनान शापित हो: वह अपने भाई बन्धुओं के दासों का दास हो।

आयत 24. कुछ समय बीतने पर, **नूह** का नशा उतर गया और उसे यह पता चला की हाम ने उसके साथ क्या किया עָשָׂה *(असाह)* है। क्रिया "किया है" *(असाह)* की व्याख्या कभी-कभी इस तरह से भी की गयी है कि हाम ने अपने पिता के विरुद्ध कोई शारीरिक यौन उत्पीड़न या वैसा कुछ कार्य किया है। इस सन्दर्भ में, जरूरी नहीं कि लिखा हुआ कथन खुले रूप से ऐसा प्रगट कर रहा हो। यह सीधा इस बात की तरफ इशारा करता है कि उसने अपने पिता का आदर नहीं किया और (शायद उपहास पूर्ण ढंग से) अपने भाइयों को पिता के तम्बू के भीतर अनुचित और नग्न अवस्था में होने की जानकारी दी। हाम यहाँ पर नूह के **छोटे पुत्र** के रूप में दर्शाया गया है (10:21 पर टिप्पणी देखें)।

आयत 25. यह वचन बाइबल में नूह के द्वारा कहे गए प्रथम शब्द का उल्लेख करता है: "**कनान शापित हो: वह अपने भाई बन्धुओं के दासों का दास हो।**" यहां स्पष्ट समस्या यह है कि श्राप नूह के पोते पर पड़ा, हाम पर पड़ने के बदले जो वास्तव में दोषी था। चूंकि कनान अलग कर दिया गया था, कुछ लोग यह तर्क करते है कि वह शायद कुछ अनैतिक कार्यों में भी लिप्त था, परंतु प्रस्तुत वृत्तांत में इस तरह का कोई उल्लेख नहीं मिलता है। बल्कि यह इस बात का उदाहरण हो सकता है कि कैसे परमेश्वर का प्रकोप "बेटों, पोतों, और परपोतों को भी पितरों

का दण्ड मिलता है" (निर्गमन 20:5), हालांकि मूसा के काल के पहले तक औपचारिक रूप से इस सत्य का वर्णन नहीं किया गया था।

परमेश्वर, पिता के पाप का दंड पुत्र को देता है यह विचार अकसर ख़ारिज किया गया है क्योंकि यह बहुत एकपक्षीय और अन्याय पूर्ण लगता है। असल में, ऐसा प्रतीत होता है कि ये सिर्फ कहने का एक ढंग है कि बच्चों के कार्यों से अकसर माता पिता के चरित्र या व्यक्तित्व का पूर्वानुमान लगा जा सकता है। बच्चे और पोते अकसर - हमेशा नहीं - अपने माता पिता और उनकी प्रवृत्ति, नैतिकता, जीवनशैली, चाहे भली हो या बुरी, अपने दादा परदादों के पद चिन्हों पर ही चलते है। एक तरह से बच्चे अपने माता पिता के पापों को भुगतते हैं; पर प्रायः अपने द्वारा लिए गलत चुनावों और आदतों के कारण, वे खुद अपने ऊपर वही श्राप, दुःख, पीड़ा को ले कर आते हैं जो उनके बाप दादा ने अनुभव किया था।

जैसा की उत्पत्ति में देखा गया है कि, कैन के जीवन में उसी प्रवृत्ति, घृणा, हिंसा, पीड़ा का दोहराव विशिष्ट रूप से दिखाई पड़ता है और उसके बाद उसके वंशज में भी, विशेषकर लेमेक में (4:1-24) दानवों की दुष्टता (6:4) भी कई पीढ़ियों तक चली होगी जब तक परमेश्वर ने पुरानी सृष्टि शापित कर जल प्रलय से नाश नहीं किया (देखें 6:17; 7:23; 8:21)। पिता के और संभवतः दादा के पाप का प्रकोप बाद आने वाली संतानों पर पड़ा। उनका व्यवहार और दंड पहले से ही निश्चित नहीं था, पर तो दुष्टता जो उनके पूर्वजों की जीवनशैली बन गयी थी, उसने उनके जीवन का इस कदर चरित्र हनन किया कि उन्होंने नूह की बातों पर ध्यान देने से इनकार कर दिया और प्रलय में नाश हो गए।

नूह के पोते कनान के मामले में, श्राप किसी बुरी बात की ओर इशारा नहीं करता जो वह स्वयं अनुभव करेगा। विस्तृत रूप से कहें तो यह सब कुछ बहुत समय बाद उसकी आने वाली पीढ़ी - कनानी लोग - पर बीतेगा, जब इस्राएली चढ़ाई करने प्रतिज्ञा के देश पर जयवंत होंगे। यह विचार सही मालूम होता है क्योंकि जब मूसा कनान को श्राप दे रहा था तब वह कहता है: "वह अपने भाई बन्धुओं के दासों का दास हो" और जहाँ तक हमें ज्ञान है न हाम और न कनान ने व्यक्तिगत रूप से अपने भाइयों की गुलामी की हो: परंतु हाम के पाप के कारण उसके पुत्र "कनान के वंश (कनानियों) को शेम और येपेत के वंश की अधीनता और दासत्व में जाना पड़ा।"[19] हाम का वंश एक पक्षीय या मनमानी नियति जो उस पर आ पढ़ी थी, का निर्दोष शिकार नहीं था; श्राप इसलिए उन पर आया क्योंकि उन्होंने हाम की तरह बर्ताव किया, यौन सम्बन्धी अपराध और नीचता जो उनके मूर्तिपूजक जीवनशैली का हिस्सा थी, उमसे वे अपने पूर्वजों से भी बहुत आगे निकल गए।वे इस्राएलियों के द्वारा कनान की भूमि से बेदखल कर दिए गए, क्योंकि उनका पाप सभी सीमाओं को तोड़ चूका था और परमेश्वर इसे बर्दाश्त नहीं करने वाला था (देखें 15:16; लैव्य. 18:3-30; व्यव. 9:4-6)।

शेम और येपेत पर नूह की आशीष (9:26, 27)

[26]फिर उसने कहा, शेम का परमेश्वर यहोवा धन्य है, और कनान शेम का दास हो। [27]परमेश्वर येपेत के वंश को फैलाए; और वह शेम के तम्बुओं में बसे, और कनान उसका दास हो।

आयत 26. नूह अपमान करने वाले को श्राप देकर शांत नहीं हुआ, उसने आगे कहा, "**शेम का परमेश्वर यहोवा धन्य है।**" यहाँ "शेम" को नहीं परंतु; "परमेश्वर" को धन्य कहा जा रहा है। आमतौर पर, किसी का नाम लेकर परमेश्वर को धन्य कहना इस बात का संकेत है कि उस व्यक्ति ने कोई सराहनीय कार्य किया है। एक निश्चित स्पष्टीकरण के अभाव में पाठक को ऐसा विश्वास होने लगता है कि, नूह परमेश्वर को "शेम का परमेश्वर" होने के नाते, आशीषित या उसकी प्रशंसा कर रहा है। नूह ने शायद यह जान लिए था कि हाम के स्वभाव के विपरीत, शेम परमेश्वर के प्रति समर्पित है। परमेश्वर के चुने हुओं की कड़ी अब इसके वंश बढ़ती जाएगी, जैसा की पहले शेत के द्वारा आया (4:26)। ये वास्तव में 11:10-26 के दी गई वंशावली से निकला है जो अब्राहम की बुलाहट के साथ ही समाप्त होगा (12:1-3)।

परमेश्वर की प्रशंसा शेम के परमेश्वर के रूप में करने के बाद, नूह फिर कहता है "**और कनान शेम का दास हो**" बाद में इस्राएल और कनान के मध्य होने वाले युद्ध और परमेश्वर के चुने हुए राष्ट्र की विजय को अगर किनारे रख दें तो, कुलपति नूह के द्वारा कही इस तरह की बात को समझना कठिन है। वह दासता, जिसमें कनानी लोगों को भविष्य में जाना था, वह हाम के पाप के कारण नहीं बल्कि उनकी व्याप्त दुष्टता के कारण था। पाप की एक छोटी धारा जो जल प्रलय के बाद फूट निकली थी वह हाम की संतान, कनान के जीवन में दुष्टता और मूर्तिपूजा का एक विशाल रूप और प्रचंड धारा बन जाएगी। तथापि यह भविष्यवाणी तीन सौ वर्ष के पूर्व पूरी नहीं हुई, जब तक उनके अधर्म की सीमा "पूरी हुई" (15:16)।[20] परमेश्वर कनानियों के साथ भी धीरज धरे हुए था न्याय करने में धीमा था, उसने कनान को मन फिराने का बहुत अवसर दिया (देखें 2 पतरस 3:9)।

आयत 27. श्राप और आशीष के बाद, नूह एक आवाहन करता है: **"परमेश्वर येपेत के वंश को फैलाए"** हमें इस प्रार्थना को, जो नूह की 9:26 में पाई जाने वाली आशीष के सामान है, आने वाले दिनों में होने वाली महान घटनाओं की भविष्यवाणी के रूप में देखना चाहिए, ना कि किसी उत्तरकालीन लेखक के द्वारा कनान के पतन के उपरान्त पुनःअवलोकन में लिखी गई बातों के रूप में, जैसा कुछ लोगों की मान्यता है।

एक और इब्री शब्दों का खेल आयत 27 के प्रथम भाग में देखने को मिलता है, कुलपति नूह परमेश्वर से आग्रह करता है कि वह परमेश्वर יֶפֶת *(येपेत)* को "फैलाए" יַפְתְּ *(याप्थ)*। येपेत का परिवार किस तरह से फैला? नूह के इस पुत्र के

द्वारा कौन से लोग निकले? उत्पत्ति 10:2-5 में, येपेत को प्राचीन अनातोलिया के उत्तर इस्राएल (आज का तुर्की और कुछ पुराने सोवियत संघ के मैदानी इलाके) उत्तर से यूनान और एगिअन क्षेत्र और साथ ही साथ बहुत से इंडो यूरोपियन लोग।[21]

अगला खंड **"और वह शेम के तम्बुओं में बसे,"** सुनने में बहुत सीधा और सरल लगता है पर यह "किसके लिए" कहा जा रहा है? जब इस लेख का अरामी भाषा में तरगुम ऑफ़ ओन्केलोस नामक पुस्तक में व्याख्या की गई, तो इसमें परमेश्वर का नाम लेते हुए कहा गया, "वह शेम के तम्बुओं में अपनी शेकिनाह [महिमा] को बसाएगा।"[22] ईसा पश्चात प्रथम और द्वितीय शताब्दी[23] के बाद में हुई इब्रानी व्याख्या सराहना के योग्य नही है। आगे, इसमें व्याकरण के मौलिक नियम का भी उल्लंघन हुआ है, इसमें कहता है कि एक सर्वनाम स्वाभाविक रूप से अपने सबसे करीबी पूर्वज की तरफ संकेत करता है। इस नियम के अनुसार कुछ विशिष्ट उदाहरण सामने आते हैं परंतु यहाँ पर कुछ अलग करने के लिए कोई तर्कसंगत कारण नहीं दिया जा सकता। परमेश्वर ने अपने लोगों के मध्य तम्बुओं में वास किया (निर्गमन 25:8; 29:42-46), पर वह अवधारणा यहाँ चर्चा में नहीं है। यह आवाहन "परमेश्वर" को "येपेत को फैलाने" और "उसे [येपेत] शेम के तम्बुओं में वास कराने" से ज्यादा और कुछ नहीं है।

इस निवेदन का स्वाभाविक अर्थ ये है कि नूह यह चाहता था कि येपेत की भूमि और उसके प्रभाव में बढ़ोतरी हो, और वह शेम के तम्बुओं में निवास करे। कुछ का मानना है कि जब क्रेता और एगियन टापू से फिलिस्तीनी लोग न्यायियों और शाऊल के राज्य के काल में, बहुत से इस्राएलियों द्वारा चढ़ाई करके उन्हें वशीभूत कर लिया, तब नूह के द्वारा कही हुई बात पूरी हुई। कुछ सोचते हैं कि एंटीओकास एपीफेनेस IV (चतुर्थ) जो एक सेलिऊसिड राजा था उसके शासन के दौरान हुआ दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में। ऐसा कुछ पूर्ण होना एक *श्राप* सा होगा क्योंकि येपेत के वंशजों को मजबूर किया जायेगा कि वे हाम के तम्बू में रहें या उस पर कब्ज़ा कर लें।

नूह की आशीष इसके विपरीत है, उसने कहा है कि येपेत के वंशज "हाम के तम्बू" "में निवास करेंगे" (शांतिपूर्ण)। नए नियम के समय तक, इतिहास के उस दौर का पता लगाना जब वास्तव में यह भविष्यवाणी पूरी हुई काफी कठिन है। सीरिया के अन्ताकिया से तर्शिश, गलतियों के शहर, एफेसुस, एगियन सागर मकिदुनिया, यूनान और भी आगे तक की पौलुस की धर्मोपदेशक (मिशनरी) यात्रा के समय नूह का यह निवेदन सही मायनों में पूर्ण होता है। इन्हीं क्षेत्रों में येपेत की संतान (अन्यजाति मसीही) और शेम की संतान (यहूदी मसीही) शान्ति से साथ लाए गए - एक निवास स्थान में - कलीसिया, मसीह का आत्मिक देह (इफि. 2:11-22)।

9:27 में अंतिम कथन ये है कि **कनान** न केवल शेम का परंतु हेपेत का भी **दास** होना था। यह तीसरी बार था जब कनान के दासत्व का पूर्वानुमान लगाया गया था, श्राप को और प्रभावी बनाते हुए। दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व (अब्राहम

के समय) से ही बहुत से कनानी लोग न केवल फिलिस्तीन में वास करते थे, बल्कि कनान के उत्तर में स्थित भूमध्य सागर के पूर्वी क्षेत्रों (आधुनिक लबानोन से सीरिया के उग्रेत)[24] में भी बस चुके थे। प्राचीन लेखों के अनुसार, इस्राएलियों द्वारा प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश को अधिक समय नहीं बीता था कि एशियाई द्वीप के समुद्री लोग (जिसमें से कुछ लोग येपेत के वंशज भी थे) भी कनानियों द्वारा लम्बे समय से कब्ज़े में रखी भूमि को प्राप्त करने की ताक में थे।ऐसी घटनाएं नूह द्वारा येपेत को दी गयी आशीषों की पूर्ति भी हो सकती है।

नूह की मृत्यु (9:28, 29)

[28]जलप्रलय के पश्चात नूह साढ़े तीन सौ वर्ष जीवित रहा। [29]और नूह की कुल अवस्था साढ़े नौ सौ वर्ष की हुई: तत्पश्चात वह मर गया।

शेत की वंशावली, जिसे पहले 5:3-32 में बताया गया था, उसे नूह की कहानी के दो मृत्युसूचक वाक्यों के साथ समाप्त किया गया।

आयत 28. अध्याय 5 पर चर्चा करते हुए, हमने उन प्राचीन दस्तावेजों में क्रमांक 10 की महत्वता पर ध्यान दिया। नूह उस वंशावली में दसवां और अंतिम स्थान रखता है। यहाँ लेख में लिखा है कि जलप्रलय के पश्चात **नूह साढ़े तीन सौ वर्ष जीवित रहा**। इसलिए वह प्रलय से पूर्व की दुनिया और प्रलय के बाद की दुनिया जो बाद आई के मध्य द्वारसन्धि बना।

शेत के वंशज के विषय जो सामान्य प्रकाशन अध्याय 5 में है, "और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं" वह इस विवरण से गायब है। यह अनुपस्थिति इस बात को निश्चायक बनाती है कि जलप्रलय के बाद सारी मानव जाति नूह के तीन पुत्र: शेम, हाम, और येपेत से ही निकली।

आयत 29. कुलपति नूह के मरने का वर्णन ऐसे ख़त्म होता है, **और नूह की कुल अवस्था साढ़े नौ सौ वर्ष की हुई**: तत्पश्चात वह मर गया। अटनापिश्तिम की पौराणिक गाथाओं के अनुसार बेबिलोनी नूह प्रलय के बाद ईश्वर के समान अनश्वर बना दिया गया था।[25] वास्तविक नूह का अंत वैसे ही हुआ जैसे हनोक को छोड़ उसके सब पूर्वजों का हुआ था अर्थात "वह मर गया।" इस घटना की जिनकी सूची 5:3-32 में दी गयी है।

अनुप्रयोग

परमेश्वर का अनुग्रह का वरदान (9:1-20)

एक तरह से, नूह दूसरा आदम था। वह और उसका परिवार जहाज़ से बाहर निकल कर एक नई दुनिया में प्रवेश करते है, जो प्रलय पूर्व के दुष्ट लोगों से शुद्ध और साफ़ कर दी गयी थी। परमेश्वर अपने अनुग्रह के द्वारा मनुष्य जाति को नई शुरुवात दे रहा था। उसने अदन में आदम और हव्वा पर डाले गए श्रापों का मुद्दा

फिर नहीं उठाया पर ज़रूर कुछ आरंभिक आशीषों को पुनः दोहराया। साथ ही साथ उसने नई मानवजाति के जनकों को कुछ अन्य आशीषें भी दीं।

प्रथम प्रावधान: मनुष्यों के परिवार में बढ़ोतरी (9:1, 7)। पहली आज्ञा और आशीष जो सृष्टि की उत्पत्ति (1:28) में पाई जाती है, वह नूह के परिवार के लिए दो बार दोहराई गयी है, प्रलय के बाद के लोगों पर यह ज़ोर देते हुए "फलो फूलों और पृथ्वी पर भर जाओ" (9:1, 7)। विवाह के अध्यादेश की, एक पवित्र संस्थान के रूप में परमेश्वर द्वारा पुनः पुष्टि की गयी (2:22-25; देखें मत्ती 19:4-6), अपमानजनक मंडली/संगत के ऊपर स्त्री पुरुष के संबंध को उठाया गया और समाज में स्थिरता को बढ़ावा दिया गया। मनुष्यों को निरंकुश वासना और शारीरिक भोग विलास में अत्यधिक लिप्त होने परे रखने के लिए यह परमेश्वर द्वारा किया गया प्रयास था। संसार में ज़्यादा भ्रष्टता इस व्यवस्था को, बहुविवाह प्रथा और गलत कारणों से विवाह करने के द्वारा अपवित्र करने के कारण आई।

आदम और हव्वा के ज़्यादातर वंशज ने इस अनियंत्रित पाप में हिस्सा लिया जिसने पृथ्वी को भर दिया। हालांकि शेत के धर्मी घराने ने किसी तरह सच्चे परमेश्वर के ज्ञान को बचाए रखा और आने वाली पीढ़ी को वह विरासत सौंपी। यह प्रक्रिया नूह में पूर्ण हुई। मनुष्य का पाप में लिप्त रहने के बावजूद अनुग्रह से सीमाबद्ध और नश्वर मानव के द्वारा सम्पूर्ण मानव जाति का उद्धार नूह की एक संतान के द्वारा आने वाला था: शेम (10:21-31), जो अब्राम (इब्राहिम; 11:10-26) का पूर्वज था और अंत में यीशु मसीह भी उसी के वंश में आयेंगे (मत्ती 1:1-17; गला. 3:8-29)।

पवित्र शास्त्र के अनुसार बच्चे परमेश्वर के दान के रूप में देखें गए है। बहुत से बच्चे और नाती पोते हमेशा ईश्वरीय कृपा का प्रमाण माना गया है (24:60; भजन 127:3-5; 128:3, 4)। दुर्भाग्य पूर्ण बहुत से देशों में गर्भपात के आकड़ों को देखकर प्रतीत होता है कि बहुत से लोग बच्चों को आशीष के रूप में नहीं देखते। बाइबल के समय, परमेश्वर के लोगों ने कभी भी गर्भपात का विचार भी नहीं किया होगा। वे जानते थे जीवन परमेश्वर का वरदान है और बच्चे उसकी आशीष है जिसे प्यार करने, सुरक्षित रखने और परमेश्वर की महिमा के लिए निर्देशित करने की जरूरत है।

द्वितीय प्रावधान: मनुष्य जीवन को बनाये रखना (9:2-4, 20)। मनुष्य जल प्रलय के पहले जानवरों का मांस खाते थे या नहीं इस बारे में बाइबल शांत है। पर हम ये जानते है कि मनुष्य के पतन के बाद, कोई व्यक्ति अपने साथी मानव का लहू बहाने को कोई बड़ी बात नहीं समझता था (4:8, 14, 23, 24; 6:11); और ये संदेहात्मक है की वे जानवरों को मारने से हिचकिचाए होंगे। हो सकता है परमेश्वर ने जानवरों के विषय में अनुमति दी, पर इस कार्य को करने हेतु प्रथम पूर्ण अधिकार उन्हें नूह और उसके परिवार के जहाज़ ने निकलने के बाद ही प्राप्त हुई। उन बीज के अलावा, जो नूह नई सृष्टि में बोने के लिए जहाज़ में ले आया था (9:20), परमेश्वर ने यह प्रावधान भी बनाया कि सब चलने वाले जंतु, आकाश के पक्षी और सब रेंगने वाले जीव खाने योग्य होंगे (9:3)।

परमेश्वर ने इन सभी जीव जंतुओं के अन्दर मनुष्यों का भय समा दिया (9:2)। यह परिवर्तन शायद इसलिए किया गया था कि जीव जंतु सहज बोध से मनुष्यों से दूर भागें ताकि अत्यधिक शिकार होने के कारण लुप्त न हो जाये। मानव जाति और जानवर को शारीरिक रूप से बने रहने के लिए ज़रूरी है की वे एक दूसरे से अलग रहे , चाहे जानवर या पेड़ पौधे। इन्हीं कारणों से परमेश्वर ने मनुष्यों को सारी पृथ्वी पर अधिकार दिया। उसने उनके लिए कुछ सीमाएं भी बाँधी: भले ही जानवरों का मांस खाने की अनुमति मनुष्यों को थी परंतु लहू खाने की मनाही भी थी (9:4)। यहाँ परमेश्वर ने संक्षिप्त रूप में जो नूह को बताया बाद में वही बाते बहुत ही विस्तृत रूप से मूसा को बताई: जीवन लहू में होता है, और इस जीवन का आदर करने होगा क्योंकि यह परमेश्वर यहोवा की ओर से आता है (लैव्य. 3:17; 7:26, 27; 17:10-14; व्यव. 12:16, 23-25; 15:23)।

मनुष्यों को हमेशा अपनी ज़रूरत और चाहत/इच्छा में अंतर करने में परेशानी होती आई है। जब भी हम कुछ आकर्षक चीज़ देखते है हम उसे प्राप्त करने की इच्छा में गिरते है और अगर इस तरह के विचारों को रोका न जाए तो हमें ऐसा लगने लगता है की हम उसके बगैर जी नहीं सकते और उसे अपनी "ज़रूरत" का नाम दे देते है। यह आरंभ से ही मनुष्य की कमजोरी रही है, जब परमेश्वर ने आदम और हव्वा को अदन की वाटिका में रखा तब उसने उनकी ज़रूरत की सभी चीज़ों का प्रबंध भी किया। उनके पास खाने के लिए सब प्रकार के फल और पौधे थे। उनके पाप में गिरने के बाद भी परमेश्वर ने उन्हें जानवर की खाल से ढका (1:29; 2:9, 16; 3:21)। भोजन और कपड़ा आज भी मनुष्य की दो आधारभूत जरूरतें है, जैसे की यीशु ने भी अपने पहाड़ी उपदेश में उन लोगों को, जो इस चिंता में थे की क्या खायेंगे और क्या पहनेंगे, संबोधित किया। उसने इस बात पर ज़ोर दिया कि जब हमारा परमेश्वर फूलों को सुन्दर वस्त्र पहनाता है और आकाश के पक्षियों को भोजन देता है, तब वह निश्चित रूप से अपने प्यारे बच्चों को भोजन और वस्त्र प्रदान करेगा। परमेश्वर को मालूम है की हमें किन चीज़ों की जरूरत है (मत्ती 6:25-32)।

प्रेरित पौलुस भी इससे से सहमत होता है। वह भी इसी तरह मनुष्य जरूरतों को कम करते हुए कहता है "और यदि हमारे पास खाने और पहनने को हो, तो इन्हीं पर सन्तोष करना चाहिए" (1 तीमु. 6:8)। इसका यह अर्थ बिलकुल नहीं है कि जरूरत से ज्यादा रखना गलत बात है, पर भौतिक वस्तुओं के लोभ और लालच को जरूरत समझने की भूल के विरोध में एक चेतावनी है। जो लोग इस जाल में फंस जाते है उनकी पूरी ज़िन्दगी ज़्यादा से ज़्यादा धन कमाने में निकल जाती है ताकि वे अधिक से अधिक भौतिक वस्तु खरीद सकें। क्योंकि वे अपने स्वार्थ पूर्ण इच्छाओं को उससे संतुष्ट करने का प्रयास करते है। पौलुस, मूर्खता पूर्ण और हानिकारक इच्छाएं जो मनुष्य को विनाश की ओर धकेलती है, उनके विरोध में यह चिताते हुए कहते है "क्योंकि धन का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है, जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए कितनों ने

विश्वास से भटक कर अपने आप को नाना प्रकार के दुखों से छलनी कर लिया है" (1 तीमु. 6:9,10)।

तीसरा प्रावधान: मनुष्य जाति की सुरक्षा (9:5, 6)। नूह को इस बात का निर्देश देने के बाद कि वह जानवरों के मांस को वह अपना आहार बना सकता है परंतु उनका लहू नहीं खा सकता, परमेश्वर एक और महत्वपूर्ण विषय की ओर बढ़ता है: मनुष्यों का लहू बहाना। भय युक्त या प्रतिरोधी जानवर जो या तो मनुष्यों से डरते हो या उन्हें अपना आहार बनाना चाहते हो, के विरोध में परमेश्वर एक स्तर तक सुरक्षा प्रदान करता है। वह इस बात पर ज़ोर डालता है कि मनुष्य और जानवर दोनों को मनुष्य का लहू बहाने के लिए ज़िम्मेदार ठहराया जायेगा। इस आज्ञा का उल्लंघन करने वाले को अपने लहू का जुर्माना देना होगा (सीधे शब्दों में "तुम्हारा लहू अर्थात तुम्हारा प्राण"; 9:5)।

वे जानवर जो मनुष्यों से शारीरिक बल में अधिक है वे मानव जीवन के लिए बड़ा खतरा बन सकते है**,** पर वे अंधा धुंध या विवेकहीनता से मारे नहीं जाने चाहिए। परमेश्वर ने कहा जो जानवर मनुष्य पर हमला करे वह मनुष्य जीवन को बचाने हेतु मार दिया जाये। सबका जीवन महत्वपूर्ण है; पर मनुष्य जीवन परमेश्वर की नज़र में विशेष है, और उनके अधिकार दोषमुक्त है - न केवल विवेकपूर्ण मनुष्य के विरुद्ध में पर उन अविवेकी जानवरों के भी विरुद्ध जो खूंखार रूप से मानव पर हमला करते है।

जल प्रलय के बाद जानवरों से मनुष्यों को सुरक्षित रखने के लिए परमेश्वर ने उनके मन में मनुष्यों का भय डाल दिया। तत्पश्चात उसे अपना भय मनुष्यों के मन में डालना पड़ा ताकि वे एक दूसरे को मार न डाले जैसे वे जल प्रलय के पहले कर रहे थे। (6:11-13)। आज के समान, हत्यारों को इस बात को जानना आवश्यक था कि उन्हें अपने सृष्टिकर्ता को उत्तर देना होगा। अपने साथी मानव पर हमले करना, एक तरह से परमेश्वर पर हमला करने जैसा है। सभी का जीवन परमेश्वर के तरफ से एक वरदान के रूप में देखा जाना चाहिए। मनुष्य जीवन को नष्ट करना ऐसा है जैसे परमेश्वर के स्थान पर खड़ा होकर उसके स्वरूप में बनाये गए किसी को नाश करना (9:6)। चूंकि केवल परमेश्वर जीवन दे सकता है इसलिए जीवन लेने का अधिकार भी केवल उसी के पास है (अय्यूब 1:21)।

जहाँ तक हमें ज्ञात है, प्रलय से पहले परमेश्वर ने हत्यारों के लिए कोई मृत्यु दंड की आज्ञा नहीं दी थी; परंतु यह सब आरंभ से ही होता चला आ रहा है, संभवतः पीड़ित के किसी रिश्तेदार के द्वारा। कैन को मृत्यु का डर था कि कोई उसके भाई की हत्या का बदला उससे न ले ले (4:14)। शायद, कोई नियमित न्याय व्यवस्था प्रलय पूर्व दुनिया में नहीं पायी जाति थी। लेमेक ने कम से कम इस बात को छिपाया नहीं कि उसने एक जवान व्यक्ति की हत्या की थी बल्कि वह इस की गयी हत्या पर अपनी पत्नियों के सामने डींग मार रहा है (4:23, 24)। वह किसी व्यक्ति के हाथों से किसी भी तरह के न्याय या दंड पाने के भय से बिल्कुल मुक्त नज़र आ रहा है।

समय बीतने के साथ, जब हत्या और हिंसा प्रलय के पूर्व तेज़ी से फैलने लगी। तब प्रमाणित रूप से कोई व्यक्ति या सरकारी संस्था नहीं थी जो अपराधी को उसके अपराध के लिए दोषी ठहरा सके। दंड का सामना करने के बजाय वे अपना नाम[26] ऊँचा करके उस समाज के नायक बन गए (6:4)। अपने सर्वश्रेष्ठ अधिकार को आखिरी बार और हमेशा के लिए दर्शाने हेतु परमेश्वर ने पुरानी दुनिया में प्रलय के द्वारा सार्वभौमिक दंड को भेजा, सिर्फ नूह और उसके परिवार को ही बचाया गया।

जल प्रलय के बाद मानव जाति के बचाने के लिए परमेश्वर ने नूह को हत्या करने वालों पर कार्यवाही करने के निर्देश दिए। "जो कोई मनुष्य का लहू बहाएगा उसका लहू मनुष्य ही से बहाया जाएगा क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप के अनुसार बनाया है" (9:6)। एक ऐसे व्यक्ति को जो परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया है, जानबूझकर और संवेदनहीनता से मारने के बदले हत्या करने वाले को दंड के रूप में अपना प्राण देना होगा। किसी - बाद में बनी कोई संस्था - को हत्यारे को दंड देने का अधिकार दिया जाना था। यह नागरिक या असैनिक सरकार का पहला आरम्भ था। इस तरह से परमेश्वर ने हत्यारों को प्राण दंड देने का अपना सर्वोच्च अधिकार मनुष्यों को भी दिया। मानवीय सरकार और मृत्यु दंड साथ-साथ चलते है, जैसा पौलुस दावे से दृढ़ता पूर्वक रोमियों 13:1-7 में कहता है, अधिकारी बुरे काम करने वालों को दंड देने के लिए परमेश्वर द्वारा ठहराया हुआ सेवक है, और "क्योंकि वह तलवार व्यर्थ लिये हुए नहीं।"[27] मनुष्य द्वारा बनाई गयी व्यवस्था में कमियां होती हैं, कभी-कभी अधिकारी अपने अधिकारों और शक्ति का दुरुपयोग भी करते है और निर्दोषों को उस अपराध की सज़ा मिल सकती है जो उन्होंने किया ही नहीं हो। फिर भी कोई न्याय व्यवस्था न होने से कमियों वाली न्याय व्यवस्था और शासन बेहतर है, क्योंकि ऐसी स्थिति में जिसको जो सही लगेगा वह वही करेगा (न्यायियों 17:6; 18:1; 19:1; 21:25)।

प्रावधान 4: पृथ्वी पर जीवन को संरक्षित करने के लिए एक वाचा (9:15-17) जल प्रलय के बाद मनुष्यों से जो वाचा परमेश्वर ने बाँधी थी उसे आमतौर पर "नोएइक कवनेंट" (Noachic covenant) कहते है, पर यह नूह के परिवार से की गयी कोई साधारण वाचा नहीं थी। यह वाचा उसके सारे "वंश" (9:9) और आने वाली सारी पीढ़ी से बाँधी गयी थी (9:12)। वाचा सिर्फ यही तक सीमित नहीं हुई, हर प्रकार के, "सारे जीव जंतु" इस वाचा के अंतर्गत आते थे (9:10, 12, 15)। मनुष्य, पक्षी, जानवर, सारे रेंगने वाले जंतु भी इस वाचा के लाभार्थी थे। प्रलय के बाद बचाए गए सभी प्राणियों से परमेश्वर ने एक बिना शर्त के प्रतिज्ञा की, जो संसार के अंत तक बनी रहेगी: वह संसार और उसमें रहने वालों को नाश करने के लिए दोबारा कभी जल प्रलय नहीं करेगा। ये इसलिए ताकि मनुष्य बादलों में कोई अशुभ चिन्ह देखा कर या आंधी देखकर जल प्रलय के डर से निराश न हो।

आमतौर पर प्राचीन कल में जब भी वाचाएं बाँधी जाति थी तो दोनों पक्षों की जिम्मेवारी बराबर की होती थी। फिर भी परमेश्वर ने इस वाचा को पूर्णता अपने तक ही रखा, इसके पूरे होने के लिए मनुष्यों के सामने उसने कोई शर्त नहीं राखी। मनुष्यों से अपनी इस "अनंत वाचा" (9:16), को वह पूरा करेगा इस बात का विश्वास दिलाने के लिए उसने आकाश में एक मेघधनुष का "चिन्ह" ठहराया जिसे मनुष्य आंखों से देख सके। ये उसकी वाचा में विश्वासयोग्यता का गवाह होगा (9:12-17)। पापी संसार में परमेश्वर के अनुग्रह का प्रतीक आकाश में नज़र आता परमेश्वर का धनुष है; यह आने वाली पीढ़ियों को एक आशा देगा कि परमेश्वर अब कभी संसार और उसके बसने वाले प्राणियों को जल प्रलय से नाश नहीं करेगा।

इस सच्चाई के बावजूद कि सब ने पाप किया है (रोमियों 3:23), परमेश्वर अपनी बनाई हुई सृष्टि को आशीष देने और उन्हें सभी अच्छे वरदान प्रदान करने की इच्छा रखता है (देखें मत्ती 5:45; 7:11)। हमें प्यार करने वाले, रक्षा करने वाले, और जरूरतों को पूरा करने वाले के बदले हमारी सच्ची प्रतिक्रिया यही होगी कि हम भी उससे प्रेम करें, तथा उसकी आज्ञा का पालन करें।

मेघधनुष में आश्वासन (9:12-17)

जब परमेश्वर के लोग बहुत कठिनाई में थे और अपने विश्वास को खो देने की कगार पर थे, तब यहोवा ने मेघधनुष के स्वरूप में दो बार स्वयं को प्रगट किया। वह पीड़ा में पड़े अपने लोगों को यह बताना चाहता था कि वह स्वर्ग और पृथ्वी का महान परमेश्वर है, वह आज भी अपने सिंहासन पर विराजमान है और सारे इतिहास को नियंत्रित करता है।

परमेश्वर की महिमा: यहेजकेल की किताब में मेघधनुष। बेबीलोन की बंधुवाई के दूसरे चरण में, करीब 598 ई.पू. में, मेघधनुष का प्रतीकात्मक इस्तेमाल का उदाहरण पाया जाता है, जब यहेजकेल, राजा यहोयाकीम,और यरूशलेम के दस हज़ार नागरिक बंदी बना कर बेबीलोन ले जाए गए (2 राजा 24:8-17)। पाँच वर्ष बाद (करीब 593 ई.पू.), परमेश्वर ने यहेजकेल को नबी होने की बुलाहट दी। यहेजकेल का कार्य कबार नदी में उसके साथ रहने वालों को यह चेतावनी देना था कि यरूशलेम शहर और मंदिर नाश हो जाएंगे यदि यहूदा के लोगों ने मूर्तिपूजा और अपने दुष्टता से मन फिरा के पश्चताप नहीं किया। अभिलेख के अनुसार, बंधुवाई में रहते हुए यह उसका पहले दर्शन था, भविष्यवक्ता ने कहा,

> तब ... तब स्वर्ग खुल गया, और मैं ने परमेश्वर के दर्शन पाए ...
>
> जब मैं देखने लगा, तो क्या देखता हूँ कि उत्तर दिशा से बड़ी घटा, और लहराती हुई आग सहित बड़ी आंधी आ रही है; और घटा के चारों ओर प्रकाश और आग के बीचों बीच से झलकाया हुआ पीतल सा कुछ दिखाई देता है, फिर उसके बीच से चार जीवधारियों के समान कुछ निकले, और उनका रूप मनुष्य

के समान था ...

जब मैं जीवधारियों को देख ही रहा था, तो क्या देखा कि भूमि पर उनके पास चारों मुखों की गिनती के अनुसार, एक एक पहिया था ...

जीवधारियों के सिरों के ऊपर आकाश मण्डल सा कुछ था जो बर्फ की नाई भयानक रीति से चमकता था, और वह उनके सिरों के ऊपर फैला हुआ था। और आकाश मण्डल के नीचे, उनके पंख एक दूसरे की ओर सीधे फैले हुए थे; और हर एक जीवधारी के दो दो और पंख थे जिन से उनके शरीर ढंपे हुए थे। और उनके चलते समय उनके पंखों की फड़फड़ाहट की आहट मुझे बहुत से जल, और सर्वशक्तिमान की वाणी, और सेना के हलचल की सी सुनाई पड़ती थी; और जब वे खड़े होते थे, तब अपने पंख लटका लेते थे। फिर उनके सिरों के ऊपर जो आकाश मण्डल था, उसके ऊपर से एक शब्द सुनाई पड़ता था; और जब वे खड़े होते थे, तब अपने पंख लटका लेते थे।

उनके सिरों के ऊपर आकाश मंडल में को फैला हुआ था वह कुछ कुछ सिंहासन की तरह लग रहा था, जो देखने में नीलम के सामान; और जिसपर बहुत ऊँचे पर, उस सिंहासन इस सिंहासन के ऊपर मनुष्य के समान कोई दिखाई देता था। और उसकी मानो कमर से ले कर ऊपर की ओर मुझे झलकाया हुआ पीतल सा दिखाई पड़ा, और उसके भीतर और चारों ओर आग सी दिखाई पड़ती थी; फिर उस मनुष्य की कमर से ले कर नीचे की ओर भी मुझे कुछ आग सी दिखाई पड़ती थी; और *उसके चारों ओर जैसे वर्षा के दिन बादल में धनुष दिखाई पड़ता है, वैसे ही चारों ओर का प्रकाश दिखाई देता था।* यहोवा के तेज का रूप ऐसा ही था। और उसे देख कर, मैं मुंह के बल गिरा, तब मैं ने एक शब्द सुना जैसे कोई बातें करता है। वैसे ही वह नज़र आता था (यहेज. 1:1-28; ज़ोर दिया गया)।

जो इस्राएली यरूशलेम में बच गए थे वे आत्मिक भ्रम में थे, भले ही उन्होंने मंदिर को मूर्तियों और अन्य देवी देवताओं से भर लिए था, तब भी उन्हें यह भरोसा था यह अभी भी यहोवा का वास स्थान है। उन्होंने यह विश्वास नहीं किया परमेश्वर अपने मंदिर और आगे चुने हुए यहूदी राष्ट्र को नाश होने देगा।

इस भ्रम के साथ-साथ, वे लोग जो अभी भी यरूशलेम में रह रहे थे, 605 और 598 ई.पू. में बेबीलोन की बंधुवाई में ले जाये जा रहे अपने लोगों का उपहास करते थे। उन्होंने यह दावा किया की बंधुवाई में जाने वाले लोग परमेश्वर से दूर हो गए थे क्योंकि वे अब प्रतिज्ञा के देश में नहीं थे (यहेज. 11:15)।

यहेजकेल की किताब की शुरुवाती आयतें इस बात को प्रगट करती हैं कि वे बहुत ही गलत थे। एक तरफ परमेश्वर बन्धुवाई में पड़े अपने लोगों को लगातार भविष्यवक्ताओं द्वारा और अपने वचनों से तसल्ली दे रहा था वही दूसरी तरफ वह मंदिर में रखे वाचा के संदूक के करूब के ऊपर विराजमान नहीं था (देखें 2 शमूएल 6:2)। इस अति प्रतीकात्मक अंश में यहोवा को सारी कायनात के राजा के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो पहिए लगे हुए रथ के सिंहासन पर सवार है, जो एक जीवित प्राणी के द्वारा चलाया जा रहा है, इस जीवित प्राणी

की पहचान बाद में करूब के रूप में की गयी है (यहेज. 1:15-26; 10:15, 20)। यहेजकेल नबी को और भी अन्य दर्शन दिए गए, जिसमें यह स्पष्ट बताया गया कि "परमेश्वर का तेज" (उसकी उपस्थिति) लोगों की अधार्मिकता, दुष्टता और मूर्तिपूजा के कारण (यहेज. 8:3-6; 9:3-7; 10:1-5, 15-20; 11:22-25)।

यरूशलेम शहर से दूर हो चुका था। "परमेश्वर के महिमा" का नगर से चले जाने के और जैतून के पहाड़ की छोटी पर ठहर जाने के पहले, यरूशलेम के पूर्व के एक मील पर, परमेश्वर ने कबार नदी के रहने वाले बंदियों को प्रगट किया कि इस परदेश में भी वही उनका आत्मिक शरणस्थान है (מִקְדָּשׁ, *मी कादेश;* "मंदिर"; यहेज. 11:16), दूसरे शब्दों में, बेबीलोन के दासत्व में रहने वाले परमेश्वर के लोग उससे दूर नहीं थे, त्यागे या छोड़े हुए नहीं थे, जैसा की यरूशलेम के कुछ अभिमानी यहूदियों को लगता था। इसके विपरीत "परमेश्वर की महिमा" यरूशलेम से दूर जा चुकी थी।

परमेश्वर इंतज़ार करता है कि उसके लोग पश्चाताप करें और अपने हृदय और जीवन को उसकी ओर फिरें। उन्हें यह जानने की ज़रूरत थी कि वह आज भी उन्हें क्षमा करके आशीष देगा, और एक दिन उनके अपने देश में उन्हें लौटा ले आएगा (यहेज. 11:17-20)। परमेश्वर ये जानता था कि बहुत से लोग निराश और हताश है और वह उन्हें भविष्य के लिए एक नई आशा देना चाहता था। यहेजकेल का प्रथम दर्शन विशेषकर आने वाले समय के पूर्वलक्षण के रूप में महत्वपूर्ण था।

चालित रथ सिंहासन का दिखाई देना "परमेश्वर की महिमा" आग से बिजली का निकलना (यहेज. 1:4, 13, 14) परमेश्वर के न्याय के समाचार के रूप में समझा जा सकता है, और पक्का इन बातों ने उदास इस्राएलियों को और निराश कर दिया होगा। यद्यपि, परमेश्वर की महिमा के दर्शन के बहुत निकट, नबी ने अपने चारों तरफ आग सा प्रकाश देखा (यहेज. 1:27), जबकि यह दृश्य कितना डरावना प्रतीत होता होगा, यहेजकेल ने पुनः उस प्रकाश की तरफ़ देखा और बताया, "जैसे वर्षा के दिन बादल में धनुष दिखाई पड़ता है, वैसे ही चारों ओर का प्रकाश दिखाई देता था। यहोवा के तेज का रूप ऐसा ही था ..." (यहेज. 1:28)। आग के समान दिखने वाला तेज़ प्रकाश यहोवा का अपने लोगों के पाप के विरुद्ध भड़के क्रोध से बढ़कर था; बल्कि वह मेघधनुष से घिरा हुआ करता, जो न्याय के मध्य में उसकी दया और अनुग्रह को प्रकट करता है। परमेश्वर द्वारा दिए गए इस सुन्दर सन्देश ने बंधुवाई में रह रहे लोगों आशा दी, ठीक वैसे ही जैसे प्रलय के बाद आकाश के मेघधनुष ने नूह और उसके परिवार को आशा दी थी।

परमेश्वर के सिंहासन की महिमा: प्रकाशितवाक्य की किताब में मेघधनुष। अगली बार बाइबल के इतिहास में मेघधनुष का चिन्ह यहेजकेल को सदियों बाद नज़र आया, जब रोम के शासन में मसीही दुःख उठा रहे थे। "रोम अब बड़ा बेबीलोन बन गया था, वेश्यावृत्ति और सब घृणित वस्तुओं की माता" राजधानी की तुलना एक ऐसी वेश्या से की गयी थी जो, बड़ा बाबुल पृथ्वी की वेश्याओं और घृणित वस्तुओं की माता जो "पवित्र लोगों के लहू और यीशु के गवाहों के

लहू पीने से मतवाली थी" (प्रका. 17:5, 6)। यह समय परमेश्वर के लोगों के लिए बहुत ही कठिन समय था प्रथम शताब्दी ईसवीं के अंत के करीब। ऐसा लगता है कि शैतान और उसके हथियार[28] कलीसिया को नष्ट करने में शायद सफल हो जाएंगे। मसीही लोग रोम की अर्थ व्यवस्था, राजनीतिक और सैन्य बल के आगे असहाय लगते है।

इस अशांति से भरे समय में प्रेरित यूहन्ना को निर्देश मिलता है कि वह एशिया के रोम प्रांत (आज का तुर्की) की सात कलीसियाओं को पत्र लिखे, उन सभी दर्शनों के बारे में बताते हुए जो परमेश्वर ने उसे दिखाए थे (प्रका. 1:11)। प्रकाशितवाक्य की किताब जो उसके दर्शन का वर्णन करती है, यीशु के चित्रण से शुरु होती है "जो हम से प्रेम रखता है, और जिस ने अपने लहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया है" (प्रका. 1:5)।

प्रकाशितवाक्य 1:13-18 में यीशु का वर्णन एक ईश्वरीय मनुष्य की संतान के रूप में है, और वह बहुत ही प्रतीकात्मक भाषा के प्रयोग के साथ जुड़ा हुआ है। यह प्रतीकात्मक भाषा यहेजकेल 1 और दानिय्येल 7 में मौजूद परमेश्वर के चित्रण से ली गयी है। यह आशापूर्ण चित्रण यीशु का वर्णन इस तरह से करता है जो "मर गया था" पर देखो वह "अब युगानुग जीवित" है। यह अद्‌भुत और भयानक है, क्योंकि आरंभिक दर्शन में जी उठे प्रभु को परमेश्वर के सन्दर्भ में दर्शाया गया है। वह सारी कायनात का अनंत न्यायी, जो "मृत्यु और अधोलोक की कुंजियां अपने पास रखता है" (प्रका. 1:18)।

कलीसियाओं को लिखी गयी पत्रियों में स्तुति और चेतावनियाँ, आशीष और प्रोत्साहन समाविष्ट है। आशा उनके लिए बनी रहेगी जो "प्राण देने तक विश्वासी रहे": वे "जीवन का मुकुट पाएंगे" (प्रका. 2:10)। जो जय पाएंगे वे यीशु के "सिंहासन में बैठेंगे," जैसे "उसने जय पायी और पिता के साथ सिंहासन में विराजमान है" (प्रका. 3:21)। फिर भी, जो लोग झूठी शिक्षा, मूर्तिपूजा, या व्यभिचार में पड़े हुए हैं उन्हें "मन फिराने" की चुनौती दी जा रही है, अन्यथा प्रभु "शीघ्र ही आकर, अपने मुख की तलवार से उन के साथ लड़ेगा" (प्रका. 2:16)।

अपने लोगों के लिए परमेश्वर द्वारा कहे (देखें, प्रका. 1:5, 6) गए तसल्ली भरे शब्दों के बावजूद, सताए गए और हताश मसीहियों और अधिक तसल्ली की आवश्यकता थी ताकि उनको आशा मिल सके। परमेश्वर के लोगों को सख्ती से दबाया गया था। बाहरी रूप को देख कर ऐसा प्रतीत हो रहा था कि यीशु मसीह की बजाय, जो वास्तव में प्रभु, परमेश्वर और उद्धारकर्ता था, शायद बुराई जय प्राप्त कर जाये - पर परमेश्वर चाहता था कि सभी मसीही यह जान लें कि वह अब भी अपने सिंहासन पर विराजमान है और संसार की सारी परिस्थिति को नियंत्रित करता है।

न्याय रोमी साम्राज्य में प्रतीक्षित है। अंत के समय में, जिन-जिन लोगों ने पशु और उसकी मूर्ति की आराधना की, उनके साथ वे लोग भी जो दुष्ट अविश्वासी है, वे महान श्वेत न्याय के सिंहासन के सामने खड़े होंगे और अनंत दंड

के भागीदार होकर आग की झील में डाल दिए जायेंगे (प्रका. 19:19, 20; 20:11-15)। फिर भी, इन दंडों के विषय में चर्चा करने के पहले परमेश्वर अन्य मार्ग अपनाता है। तीव्र संघर्षों का सामना करते हुए, यूहन्ना के साथ इन मसीहियों को अनदेखे को देखना ज़रूरी था। बुज़ुर्ग प्रेरित यूहन्ना, अपने दर्शन में जय पाए हुए स्वर्ग का रूप देख पा रहा था; हर वह कलीसिया जिसे उसने पत्र लिखा वे, उसकी गवाही को पढ़ेंगे और जान लेंगे कि परमेश्वर ने उन पर क्या प्रगट किया है।

एशिया की सात कलीसियाओं को लिखे गए पत्रों के सामने आने के तुरंत बाद (प्रका. 2:1-3:22), यूहन्ना को यह अनुमति मिली कि वह स्वर्ग की तरफ़ दृष्टि करके उसे देखे जो सिंहासन पर विराजमान है (प्रका. 4:2-8), जो यशायाह 6:1-3, यहेजकेल 1:26-28 और दानिय्येल 7:9, 10 में भी प्रतीकात्मक रूप से चित्रित किया गया है। उसने एक मेमना देखा (यीशु) जो सिंहासन पर बैठा था, और साथ ही साथ स्वर्ग की पूरी सेना, परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र की स्तुति और आराधना कर रहे थे (प्रका. 4:9-11; 5:9-14)। जैसा यहेजकेल 1 में देखा जा सकता है , वैसे ही यहाँ भी परिस्थिति वैसी नहीं थी जैसी नज़र आ रही थी। स्वर्ग और पृथ्वी का सच्चा शासक, नबूकदनेस्सर या कैसर के समान पृथ्वी के किसी सिंहासन पर बैठा कोई अस्थाई राजा नहीं था। जो सब कुछ नियंत्रण में रखे हुए है वह प्रभु परमेश्वर है; और उसका पुत्र यीशु मसीह उसके साथ ही स्वर्ग पर विराजमान है। यूहन्ना ने लिखा:

> ... मैं ने दृष्टि की, तो क्या देखता हूं कि स्वर्ग में एक द्वार खुला हुआ है; और जिस को मैं ने पहिले तुरही के से शब्द से अपने साथ बातें करते सुना था, वही कहता है, कि यहां ऊपर आ जा: और मैं वे बातें तुझे दिखाऊंगा, जिन का इन बातों के बाद पूरा होना अवश्य है। और तुरन्त मैं आत्मा में आ गया; और क्या देखता हूं, कि एक सिंहासन स्वर्ग में धरा है, और उस सिंहासन पर कोई बैठा है। और जो उस पर बैठा है, वह यशब और मानिक सा दिखाई पड़ता है, और *उस सिंहासन के चारों ओर मरकत सा एक मेघधनुष दिखाई देता है*। और उस सिंहासन के चारों ओर चौबीस सिंहासन है; और इन सिंहासनों पर चौबीस प्राचीन श्वेत वस्त्र पहने हुए बैठें हैं, और उन के सिरों पर सोने के मुकुट हैं। और उस सिंहासन में से बिजलियां और गर्जन निकलते हैं और सिंहासन के सामने आग के सात दीपक जल रहे हैं, ये परमेश्वर की सात आत्माएं हैं। और उस सिंहासन के सामने मानो बिल्लौर के समान कांच का सा समुद्र है, और सिंहासन के बीच में और सिंहासन के चारों ओर चार प्राणी हैं, जिन के आगे पीछे आंखें ही आंखें हैं। पहिला प्राणी सिंह के समान है, और दूसरा प्राणी का मुंह बछड़े के समान है, तीसरे प्राणी का मुंह मनुष्य का सा है, और चौथा प्राणी उड़ते हुए उकाब के समान है। और चारों प्राणियों के छ: छ: पंख हैं, और चारों ओर, और भीतर आंखें ही आंखें हैं; और वे रात दिन बिना विश्राम लिए यह कहते रहते हैं, कि "पवित्र, पवित्र, पवित्र प्रभु परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, जो था, और जो है, और जो आने वाला है।" और जब वे प्राणी उस की जो सिंहासन पर

बैठा है, और जो युगानुयुग जीवता है, महिमा और आदर और धन्यवाद करेंगे। तब चौबीसों प्राचीन सिंहासन पर बैठने वाले के सामने गिर पड़ेंगे, और उसे जो युगानुयुग जीवता है प्रणाम करेंगे; और अपने-अपने मुकुट सिंहासन के सामने यह कहते हुए डाल देंगे। कि हे हमारे प्रभु, और परमेश्वर, तू ही महिमा, और आदर, और सामर्थ्य के योग्य है; क्योंकि तूने ही सब वस्तुएं सृजीं और वे तेरी ही इच्छा से थीं, और सृजी गईं (प्रका. 4:1-11 ज़ोर दिया गया)।

यूहन्ना के प्रोत्साहित करनेवाले दर्शन का मुख्यांश ये था "सिंहासन के चारों ओर मरकत सा एक मेघधनुष दिखाई देता है" (प्रका. 4:3)। यह चिन्ह बहुत सामर्थी था। जब नूह और उसका परिवार जहाज़ से बाहर निकले कि पहले से नाश हो चुकी दुनिया को देखें, तब इस धनुष द्वारा बांधी गयी वाचा ने उन्हें एक नए आरम्भ की, जीवन के क्रियाशील होने की और पृथ्वी पर परमेश्वर की आशीष के बने रहने की आशा दी। ठीक वैसे ही, जब यहूदी बेबीलोन की बंधुवाई में थे तब उन्हें बताया गया था कि यरूशलेम में रहने वाले परमेश्वर के लोगों पर विनाश आ पड़ेगा अगर उन्होंने पश्चाताप करके मन नहीं फिराया। उस दौरान यहेजकेल के दर्शन में सिंहासन के चारों ओर एक मेघधनुष जो दिखाई दिया उसने दासत्व के बाद एक नई शुरुवात की आशा का प्रतीक है। इस बात ने उन्हें आश्वासन दिया की परमेश्वर अपने लोगों को प्रतिज्ञा किए गए देश में वापस लाएगा और उन्हें पहले की तरह फिर से आशीष देगा।

प्रथम शताब्दी के अंत में, जब कैसर ने "प्रभु, परमेश्वर और उद्धारकर्ता" होने का दावा किया, यूहन्ना के दर्शन ने इस झूठ का पर्दाफाश किया, और हमें स्मरण दिलाया कि सच्चा "प्रभु, परमेश्वर और उद्धारकर्ता" स्वर्गीय सिंहासन पर विराजमान हमारा यीशु मसीह ही है। यूहन्ना ने स्वर्ग की ओर दृष्टि की और स्वर्गीय सिंहासन के चारों तरफ मेघधनुष देखा; वह दृश्य न्याय दंड के मध्य में परमेश्वर के लोगों के लिए अनुग्रह का प्रतीक था। इस बात ने उन्हें भविष्य के लिए एक आशा दी इस जीवन में अगर नहीं तो अनंत जीवन के लिए जब नया आकाश और नई पृथ्वी होगी। वह परमेश्वर उनके सारे आंसुओं को पोंछ देगा और जो बचाए हुए होंगे वे फिर शोक मनाना, रोना और दुःख उठाना और मृत्यु को न देखेंगे; वह सब बातों को नई कर देगा (प्रका. 21:1-5)। अनंत काल में, मसीह में नई सृष्टि अपने परम पूर्णता में आएगी (2 कुरि. 5:17), और हर युग के बचाए हुए लोग उस धनुष से घिरे सिंहासन के पास इकट्ठा होंगे ताकि परमेश्वर और मेमने (यीशु) की महिमा हमेशा-हमेशा करते रहें।

"अनंत वाचा" (9:16)

इब्रानी शब्द בְּרִית עוֹלָם *(बेरिथ ओलम)*, जो "अनंत वाचा" या "सार्वकालिक वाचा" के रूप में अनुवादित किया गया है, करीब सोलह बार पुराने नियम में पाया जाता है। हम इस शब्द के इस्तेमाल का सर्वेक्षण करने के बाद ओलम के अनेक अर्थों पर गौर करेंगे।

वाचा, आमतौर पर दो पक्षों के बीच का बंधन होता है, परंतु परमेश्वर ने ऐसी भी वाचाएं बंधी जिसमें उसे पूरा करने की सम्पूर्ण ज़िम्मेदारी केवल परमेश्वर पर होती थी। उदाहरण के लिए, नूह के साथ परमेश्वर की वाचा, जिसमें सिर्फ एक ही शर्त थी: परमेश्वर पृथ्वी पर दोबारा प्रलय नहीं लाएगा।

> "मैं तुम्हारे साथ अपनी इस वाचा को पूरा करूंगा; कि सब प्राणी फिर जलप्रलय से नाश न होंगे: और पृथ्वी के नाश करने के लिये फिर जलप्रलय न होगा। ... जब बादल में धनुष दिखाई पड़ेगा। तब मेरी जो वाचा तुम्हारे और सब जीवित शरीरधारी प्राणियों के साथ बान्धी है; उसको मैं स्मरण करूंगा, तब ऐसा जलप्रलय फिर न होगा जिस से सब प्राणियों का विनाश हो। बादल में जो धनुष होगा मैं उसे देख के यह *सदा की वाचा* स्मरण करूंगा जो परमेश्वर के और पृथ्वी पर के सब जीवित शरीरधारी प्राणियों के बीच बन्धी है" (9:11-16; ज़ोर दिया गया है)।

पीढ़ियों बाद, परमेश्वर ने अब्राहम से एक वाचा बाँधी। इसमें अब्राहम के परिवार पर एक शर्त थी, खतना का रिवाज़, जो शरीर पर इस बात का चिन्ह था कि वे परमेश्वर के लोग हैं।

> मैं तेरे साथ, और तेरे पश्चात पीढ़ी तक तेरे वंश के साथ भी इस आशय की युग युग की वाचा बान्धता हूं, कि मैं तेरा और तेरे पश्चात तेरे वंश का भी परमेश्वर रहूंगा। और मैं तुझ को, और तेरे पश्चात तेरे वंश को भी ... एक दास जो तेरे घर में उत्पन्न हुआ है या मोल देकर खरीदा गया है हो उनका भी खतना अवश्य ही किया जाए; सो मेरी वाचा जिसका चिन्ह तुम्हारी देह में होगा वह *युग युग रहेगी* (17:7-13; ज़ोर दिया गया है)।

परमेश्वर की वाचा एक प्रतिज्ञा किए हुए पुत्र के द्वारा अब्राहम के बाद उसके वंश तक बढ़ेगी:

> "तब परमेश्वर ने कहा ... तेरी पत्नी सारा को तुझ से एक पुत्र उत्पन्न होगा; और तू उसका नाम इसहाक रखना: और मैं उसके साथ वाचा बांधूंगा जो उसके पश्चात उसके वंश के लिये *युग-युग की वाचा होगी*" (17:19; ज़ोर दिया गया है)।

प्रतिज्ञा किए गए देश को परमेश्वर द्वारा प्रदान करने की विधि अब्राहम के पुत्र इसहाक और उसके पोते याकूब से एक "अनंत वाचा" के रूप में पक्की हो गयी (1 इतिहास 16:16-18; भजन 105:9-11)।

अब्राहम का परिवार बढ़ कर एक राष्ट्र अर्थात इस्राएल बन गया। जब परमेश्वर इस्राएलियों को मिस्र की गुलामी से निकाल लाया, तब उसने उन्हें स्वयं अपना कहा, मूसा के द्वारा उन्हें नई वाचा के रूप में एक अद्वितीय और अद्‌भुत व्यवस्था दी। उस व्यवस्था के एक भाग के अनुसार लोगों को सब्त का आराम करना अनिवार्य था: "सो इस्राएल के पुत्र विश्राम दिन को माना करें, पीढ़ी-पीढ़ी

में उसको *सदा की वाचा* का विषय जानकर माना करें" (निर्गमन 31:16; ज़ोर दिया गया है)। परमेश्वर ने याजकों की सेवा और बलिदान, जो व्यवस्था के अनुसार ठहराए गए थे उन्हें भी "अनंत वाचा" के रूप में उल्लिखित किया।

> "हर सब्त के दिन वह [हारून] उसे नित्य यहोवा के सम्मुख क्रम से रखा करे [मिलाप का तम्बू, उसके बहुमूल्य चिन्ह के साथ]; इस्राएल के पुत्र के लिए यह *सदा की वाचा है*" (लैव्य. 24:8; ज़ोर दिया गया है; देखें गिनती 18:19)।

बाद में परमेश्वर ने दाऊद से एक विशेष वाचा बाँधी, उससे प्रतिज्ञा कि उसके वंश के लोग सदा इस्राएल के सिंहासन पर रहेंगे। अपनी मृत्यु के समय, दाऊद ने कहा, "... उसने तो मेरे साथ *सदा की एक वाचा बाँधी* है; ... क्या वह सचमुच उसे नहीं बढ़ाएगा"? (2 शमूएल 23:5; ज़ोर दिया गया)।

वाचा के प्रति इस्राएल की यह ज़िम्मेदारी थी कि वह परमेश्वर की आज्ञा का पालन करे: वह उनका परमेश्वर था और वे उसके लोग। वे अकसर अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करने में चूकते थे, इसलिए वे परमेश्वर के नबियों द्वारा समय-समय पर चेतावनियाँ पाते थे:

> पृथ्वी भी उसके रहने वालों के कारण अशुद्ध हो गयी है, क्योंकि उन्होंने व्यवस्था का उल्लंघन किया और विधि को पलट डाला, और *सनातन वाचा* को तोड़ दिया है। (यशा. 24:5; ज़ोर दिया गया है)।
>
> "कान लगाओ, और मेरे पास आओ; सुनो, तब तुम जीवित रहोगे; और मैं तुम्हारे साथ *सदा की वाचा बांधूंगा* अर्थात दाऊद पर की अटल करुणा की वाचा" (यशा. 55:3; ज़ोर दिया गया है)।
>
> क्योंकि, मैं यहोवा न्याय से प्रीति रखता हूं, मैं अन्याय और होमबलि में होने वाली डकैती से घृणा करता हूं; मैं उनको विश्वासयोग्यता से प्रतिफल दूंगा और उनके साथ *सदा की वाचा बांधूंगा* (यशा. 61:8; ज़ोर दिया गया है)।
>
> "मैं उन से यह वाचा बान्धूंगा, कि मैं कभी उनका संग छोड़ कर उनका भला करना न छोड़ूंगा; और अपना भय मैं उनके मन से ऐसा उपजाऊंगा कि वे कभी मुझ से अलग होना न चाहेंगे" (यिर्म. 32:40; ज़ोर दिया गया)।
>
> "वे सिय्योन की ओर मुंह किए हुए उसका मार्ग पूछते और आपस में यह कहते आएंगे, कि आओ हम यहोवा से मेल कर लें, उसके साथ ऐसी वाचा बान्धे जो कभी भूली न जाए, परन्तु *सदा स्थिर रहे"* (यिर्म. 50:5; ज़ोर दिया गया)।
>
> "तौभी मैं तेरे बचपन के दिनों की अपनी वाचा स्मरण करूंगा, और तेरे साथ *सदा की वाचा बान्धूंगा"* (यहेज. 16:60; ज़ोर दिया गया)।
>
> "मैं उनके साथ शान्ति की वाचा बान्धूंगा; वह *सदा की वाचा ठहरेगी*; और मैं उन्हें स्थान देकर गिनती में बढ़ाऊंगा, और उनके बीच अपना पवित्र स्थान सदा बनाए रखूंगा" (यहेज. 37:26; ज़ोर दिया गया)।

'ओलम शब्द पुराने नियम में कई बार आया है और भिन्न-भिन्न सन्दर्भों में इसका अर्थ भी बदलता रहता है इसलिए इसे और अच्छे ढंग से स्पष्ट करने की आवश्यकता है।[29] जब संकेत यहोवा की तरफ़ या उसके गुणों के तरफ़ किया जा रहा हो तब हम इसका अर्थ "सर्वदा" या "अनंतकाल" समझते हैं, क्योंकि यह उसकी अनंत स्वरूप और विशेषता पर महत्व देता है (21:33; व्यव. 32:40; भजन 90:2; 145:13; यशा. 40:28; दानिय्येल 12:7)। फिर भी हर बार इसका अर्थ हमेशा "अनंतकाल," नहीं किया जा सकता।

उत्पत्ति के आरम्भ में ही, मनुष्य के जीवन काल के सन्दर्भ में हमारे सामने यह महत्वपूर्ण शब्द प्रस्तुत किया है, जो यह बताता है कि यह जीवन काल "सदा का" नहीं होगा (3:22; 6:3)। बाद में, मनुष्य के जीवन काल के विषय में कहते हुए भले ही, *'ओलम* शब्द की व्याख्या "सदा काल" के रूप में की गई है, परन्तु इसका प्रयोग अलंकार की तरह किया गया है इसका अर्थ व्यक्ति विशेष के लिए आदर और विनम्र अभिवादन है। जब बतशेबा अपने बूढ़े पति के समीप आती है, तब वह कहती है, "मेरा प्रभु राजा दाऊद सदा तक जीवित रहे" (1 राजा 1:31), जो बात इसको दर्शाती है कि वह यह चाहती है की राजा एक लम्बी आयु प्राप्त करे। नहेम्याह भी कुछ इसी तरह का अभिवादन फारस के अर्तक्षत्र राजा के लिए करता है (नहेम्य. 2:3)।

इसके विपरीत, जब यरूशलेम और सोर जैसे शहरों को शापित किया गया ताकि वे "सदा काल" के उजाड़ पड़े रहे या कभी दुबारा न बसाए जाए (यशा. 32:14; यहेज. 26:21; 27:36; 28:19), यहाँ पर *'ओलम* का सीधा अर्थ एक लम्बी अवधि है। दोनों ही शहर बाद में फिर से बनाए गए और आज तक उजाड़ पड़े हैं।

भजन का लिखने वाला कहता है कि परमेश्वर ने इस पृथ्वी को "उसकी नींव पर स्थिर किया है" ताकि वह कभी न डगमगाए [हिले डूले; NRSV] सदा काल *['ओलम]* (भजन 104:5) । पृथ्वी अनिश्चित काल, या एक लम्बी अवधि के लिए बनी रहेगी; इसकी आयु लंबी ज़रूर होगी परंतु, ये हमेशा-हमेशा के लिए बनी नहीं रहेगी। नया नियम कहता है कि प्रभु यीशु मसीह के आने की "प्रतिज्ञा" इस युग के अंत में पूरी होगी (2 पतरस 3:4)। उसके बाद "पृथ्वी" और यह भौतिक संसार "जलाए," "नाश किए जायेंगे, और अत्यंत गर्मी से पिघल जायेंगे" (2 पतरस 3:7, 10-12)। इसके बाद "आकाश और पृथ्वी ... टल जायेंगे (मत्ती 24:35), "नई पृथ्वी" और "नया आकाश" उद्धार पाए हुए लोगों का नया निवास होगा (प्रका. 21:1, 10; 22:19; देखें 2 पतरस 3:13)। इसलिए जो "अनंत काल की वाचा *['ओलम]*" परमेश्वर ने नूह के साथ उत्पत्ति 9:16 में बांधी थी वह केवल तब तक बनी रहेगी जब तक यह इस पृथ्वी का अस्तित्व बना है।

उत्पत्ति 13:15 के आधार पर *'ओलम* की व्याख्या "सदा काल" या "अनंत काल" किए जाने के कारण बहुत से लोग इस गलत निष्कर्ष में पहुँच गए है कि परमेश्वर ने अब्राहम के वंश (यहूदियों) को कनान देश *सदा* के लिए देने की प्रतिज्ञा की है। इस सन्दर्भ में इसका बेहतर अनुवाद "लम्बे समय के लिए" या "देर

तक ठहरने वाला" होगा, जो समय काल को अनिश्चित बनाता है। पुराने नियम के समय, इस्राएल द्वारा प्रतिज्ञा का देश प्राप्त करना, परमेश्वर के प्रति उनकी आज्ञाकारिता पर निर्भर करता था। एक से अधिक बार ऐसा देखा गया है कि परमेश्वर ने अपने लोगों द्वारा किए गए बलवे के कारण उन्हें देश से निकाल दिया था। जो प्रतिज्ञा परमेश्वर ने अब्राहम और मूसा के द्वारा इस्राएलियों से की थी, आज वह लुप्त हो चुकी है। वे सब अब मसीह में पूरी होंगी जिसने, नई वाचा की स्थापन की है (गला. 3:8-29; इब्रा. 8:13) ।

अपनी व्यवस्था में परमेश्वर ने लोगों को निर्देश दिया, "कोई अम्मोनी वा मोआबी यहोवा की सभा में न आने पाए उनकी दसवीं पीढ़ी तक का कोई यहोवा की सभा में कभी *['ओलम]* न आने पाए (व्यव. 23:3)। यहाँ पर *'ओलम* का अर्थ लम्बे समय तक है (दसवीं पीढ़ी) - न की "सदा काल," भले ही उसका अनुवाद यहाँ उसी तरह से किया गया है। यही इसका अर्थ वास्तव में "सदा काल" के लिए होता तो, दाऊद भी "यहोवा की सभा" से बाहर कर दिया गया होता क्योंकि वह भी रूत और बोअज, एक मोआब-इस्राएल विवाह से उत्पन्न हुआ था (रूत 4:10-22)।

कभी-कभी *'ओलम* की व्याख्या वाक्य के सन्दर्भ के अनुसार की जाती है, जैसा की हन्ना, शमूएल की माँ की कहानी में दिखाई देता है। उसने एक पुत्र प्राप्ति के लिए निरंतर प्रार्थना और प्रतिज्ञा की, "उसे जीवन भर के लिए यहोवा को अर्पण करूँगी" (1 शमूएल 1:11)। बच्चे के जन्म के बाद, उसने मन्नत मानी की वह बच्चे को, जब उसका दूध छुड़ाया जायेगा तब, परमेश्वर के भवन में ले जाएगी ताकि वह यहोवा को मुँह दिखाए और वहां सदा *['ओलम]* बना रहे (1 शमूएल 1:22)। जब समय पूरा हुआ तब वह उस बालक को एली याजक के पास ले आई और कहा "इसी लिये मैं भी उसे यहोवा को अर्पण कर देती हूं; कि यह अपने जीवन भर यहोवा ही का बना रहे" (1 शमूएल 1:28)। इस वाक्य में *'ओलम* का अर्थ "जब तक वह जीए या अपने जीवन भर" है।

प्रासंगिक व्याख्या का एक और उदाहरण योना की कहानी में दिखाई पड़ता है, जो नीनवे जाकर दुष्टता से भरे अन्य जाति को प्रचार करने से इनकार करता है और विपरीत दिशा में जा रहे जहाज़ पर सवार हो जाता है। जब प्रचंड तूफ़ान उठता है और जहाज़ डूबने लगता है तब लोग योना को समुद्र में फेंक देते है और एक बड़ी मछली आकर उसे निगल जाती है। बाद में योना उस घटना को याद करता है कि कैसे उस समुद्री सिवार ने उसे चारों ओर से लिपटा हुआ था, तब वह कहता है "मैं जल से यहां तक घिरा हुआ था कि मेरे प्राण निकले जाते थे; गहरा सागर मेरे चारों ओर था, और मेरे सिर में सिवार लिपटा हुआ था। मैं पहाड़ों की जड़ तक पहुंच गया था; मैं सदा के *['ओलम]* लिये भूमि में बन्द हो गया था; तौभी हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तू ने मेरे प्राणों को गड्ढे में से उठाया है" (योना 2:5, 6)। भले ही योना बड़ी मछली के पेट के अन्दर बीते हुए अपने समय का वर्णन "सदा के लिए" के रूप में करता है, परंतु इसका लेखक इस बात को प्रकट करता है कि उसे केवल "तीन दिन और तीन रात" के लिए रहना पड़ा था

(योना 1:17; देखें मत्ती 12:39-41)।

यह सभी उदाहरण इस बात को दर्शाते हैं कि "सदा काल" या "अनंत काल" *('ओलम)* का कोई भी अर्थ सन्दर्भ के अनुसार ही निकालना चाहिए। इसके अतिरिक्त, वे इस बात को भी प्रकट करते हैं कि परमेश्वर की वाचा अकसर मनुष्य की आज्ञाकारिता पर भी निर्भर करती है।

मदिरापान और मतवालापन (9:20, 21)

पीने के विरोध में बाइबल कोई पूर्ण रोक या उसे वर्जित नहीं करती है। प्राचीन काल में दाखमधु को एक सामान्य या जन साधारण द्वारा लिए जाने वाले पेय पदार्थ के रूप में देखा गया है। भजन का लिखने वाला साग सब्ज़ी, भोजन (रोटी) और दाखमधु को परमेश्वर के द्वारा मनुष्यों को दिए गए वरदान के रूप में देखता है, और दाखमधु के विषय में कहा गया है कि इससे "मनुष्य का मन आनंदित होता है" (भजन 104:14, 15; देखें सभो. 9:7; जकर्याह 10:7)। बुद्धिमान व्यक्ति यह भी कहता है कि दाख मधु उदास मन वालों को दो जिससे वे अपने कठिन श्रम को भूल सकें (नीति. 31:6, 7)। मूसा की व्यवस्था के अनुसार सभी होमबलि और मेलबलि के साथ दाखमधु चढ़ाने का भी निर्देश था (गिनती 15:5-10), और लोगों को, आराधना की जगह जहाँ परमेश्वर ने अपने नाम की स्थापन की थी, उसके भोज के लिए इसे खरीदने को प्रेरित किया जाता था (व्यव. 14:24-26)।

मतवालेपन के खतरे के कारण बहुत से बाइबल के लेखकों ने इसके अधिक सेवन के विरुद्ध चेतावनी दी है (नीति. 20:1; 21:17; 23:29-35; 31:4, 5; यशा. 5:11, 12; हबक्कूक 2:5)। अत्यधिक मदिरापान को कई जगह कामुकता और वेश्यावृत्ति से भी जोड़ा गया है (उत्पत्ति 19:30-38; होशे 4:11, 12)। नए नियम के समय, पौलुस भी इससे पैदा होने वाले खतरे से परिचित था। यूनानी-रोमी जगत में, नशे में धुत होकर सामूहिक लीलाक्रीडा करना बहुत से मूर्तिपूजक और अन्य जातियों के मंदिरों में की जाने वाली आराधना का हिस्सा था, और पौलुस इसे शरीर के काम कहता है, जो परमेश्वर के राज्य में एक विश्वासी को मिलने वाले अनंत जीवन की विरासत को खतरे में डालता है (1 कुरि. 6:9, 10; गला. 5:19-21)।

फिर भी, पौलुस मदिरापान के विषय में पूर्ण परहेज़ और पूर्ण स्वतंत्रता के मध्य में एक ध्यानस्थ दृष्टिकोण रखता है। उसने उन मसीहियों का पक्ष पात नहीं किया, जो खुद न्याय के सिंहासन पर बैठ कर अपने उन भाइयों पर दोष लगते हैं जिन्होंने मांस और मदिरा का सेवन किया है, परंतु उसने कहा "क्योंकि परमेश्वर का राज्य खाना पीना नहीं; परन्तु धर्म और मिलाप और वह आनन्द है" (रोमियों 14:17)। उसके साथ-साथ वह चिताता भी है कि परमेश्वर के लोगों को अपने भाइयों के विवेक के प्रति संवेदनशील होकर प्रेम से व्यवहार करना चाहिए (रोमियों 14:14, 15, 22), न कि मांस खाने और मदिरा का सेवन करने के द्वारा उनके लिए ठोकर का कारण बनकर अपनी स्वतंत्रता पर घमंड करना

चाहिए। उसने मसीहियों से आग्रह किया कि उन बातों का पीछा करे जिससे शांति की स्थापना हो और "भोजन के लिये परमेश्वर का काम न बिगाड़" (रोमियों 14:19, 20)। उसने इस बात को बनाए रखा कि "सब कुछ ... शुद्ध तो है," पर यह भी कहा की, उसके लिए ये सब बुरा है जिस को उस के भोजन करने से ठोकर लगती है (रोमियों 14:20)।[30] प्रेरित यह कह कर समाप्त करता है "भला तो यह है, कि तू न मांस खाए, और न दाखमधु पीए, न और कुछ ऐसा करे, जिस से तेरा भाई ठोकर खाए" (रोमियों 14:21)।[31]

उत्पत्ति से बाहर नूह

भविष्यवक्ता की पुस्तकों और नए नियम में नूह के विषय में कही गई बातें इस बात का पुख्ता सबूत देती हैं कि नूह एक वास्तविक व्यक्ति था जो एक बड़े प्रलय के समय में रहा। परमेश्वर ने यशायाह नबी के द्वारा नूह को एक ऐतिहासिक व्यक्ति कहा:

> यह मेरी दृष्टि में नूह के समय के जलप्रलय के समान है; क्योंकि जैसे मैं ने शपथ खाई थी कि नूह के समय के जलप्रलय से पृथ्वी फिर न डूबेगी, वैसे ही मैं ने यह भी शपथ खाई है कि फिर कभी तुझ पर क्रोध न करूंगा और न तुझ को धमकी दूंगा (यशायाह 54:9)।

यहेजकेल पुराने दिनों के अन्य धर्मी व्यक्तियों के सन्दर्भ में नूह का उल्लेख करता है: "तब चाहे उस में नूह, दानिय्येल और अय्यूब ये तीनों पुरुष हों, तौभी वे अपने धर्म के द्वारा केवल अपने ही प्राणों को बचा सकेंगे; प्रभु यहोवा की यही वाणी है" (यहेज. 14:14)।

नूह का नाम उस वंशावली में आता है जो यीशु को आदम के साथ जोड़ता है, जिसे "परमेश्वर का पुत्र" संबोधित किया गया। इसके द्वारा नूह के अस्तित्व को विश्वसनीयता प्राप्त होती है (लूका 3:23-38)। नूह का उदाहरण ले कर यीशु अपने द्वितीय आगमन के समय की परिस्थिति का वर्णन करता है:

> क्योंकि मनुष्य के पुत्र का आना भी नूह के दिन जैसा होगा। क्योंकि उन दिनों में, जल प्रलय के पूर्व लोग खाते पीते थे और उनमें शादी ब्याह होते थे, जब तक की नूह जहाज़ में नहीं चढ़ा। (मत्ती 24:37, 38; देखें, लूका 17:26, 27)।

इब्रानियों की किताब के लेखक और प्रेरित पतरस परमेश्वर के प्रति नूह की विश्वासयोग्यता से कुछ शिक्षा लेते हैं:

> विश्वास ही से नूह ने उन बातों के विषय में जो उस समय दिखाई न पड़ती थीं, चितौनी पाकर भक्ति के साथ अपने घराने के बचाव के लिये जहाज़ बनाया, और उसके द्वारा उस ने संसार को दोषी ठहराया; और उस धर्म का वारिस हुआ, जो विश्वास से होता है (इब्रा. 11:7)।
>
> ... नूह के दिनों में धीरज धर कर ठहरा रहा, और वह जहाज़ बन रहा था,

जिस में बैठकर थोड़े लोग अर्थात आठ प्राणी पानी के द्वारा बच गए। (1 पतरस 3:18-20)।

क्योंकि अगर परमेश्वर ने ... धर्म के प्रचारक नूह के साथ और सात लोगों को बचा लिया, भक्ति हीन पर महा जल प्रलय भेजा ... तो प्रभु के भक्तों को परीक्षा में से निकाल लेना और अधर्मियों को न्याय के दिन तक दण्ड की दशा में रखना भी जानता है (2 पतरस 2:4-9)।

समाप्ति नोट्स

[1]जेकब मिल्ग्रोम, "लहू," *इनसायक्लोपिडिया जूदाईका*, 2डी एड., एड. फ्रेड स्कोलनिक (डेट्रॉइट: मैकमिलन रेफरेंस यू.एस.ए., 2007), 3:771. [2]देखें एस. डेविड स्पेर्लिंग, "लहू," *एंकर बाइबल डिक्शनरी*, एड. डेविड नोएल फ्रीडमैन (न्यू यॉर्क: डबलडे, 1992),1:762. [3]लियोनार्ड जे. कोप्स, "דָּרַשׁ," *TWOT* में, 1:199. [4]केनेथ ए. मैथथियुस, *जेनेसिस, 1-11:26*, दी न्यू अमेरिकन कमेन्ट्री, वॉल्यूम 1A (नाशविले: ब्रॉडमैन एंड होलमेन पब्लिशर्स, 1996), 404. [5]इब्रानी शब्द का संभवतःयह भी अर्थ हो सकता है। (कोप्स, "קוּם," *TWOT* में, 2:793)। [6]विक्टर पी. हैमिल्टन, *द बुक आफ़ जेनेसिस: अध्याय 1-17*, दी न्यू अमेरिकन कमेन्ट्री आन ओल्ड टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड, मिशिगन: विलियम बी एरदमंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1990), 316. [7]कोप्स, "קָשָׁת," *TWOT* में, 2:819. [8]नूह के काल के बाद, प्राचीन पौराणिक कथाओं में भी ऐसे ईश्वर का चित्रण है जो, स्वर्ग में अपने शत्रुओं के विरुद्ध तीर और धनुष का प्रयोग करता था (बिजली के बाण)। [9]डब्लू. स्कॉटट्रोफ, "זכר," *थिओलोजिकल लेक्सिकन आफ़ दी ओल्ड टेस्टामेंट* में, ट्रांस. मार्क इ. बिडल, एड. अर्न्स्ट जेनी एंड क्लाउस वेस्टरमैंन (पीबॉडी, मास.: हेंड्रिकसन पब्लिशर्स, 1997), 1:383. [10]एफ. जे. हेल्फमेयर, אוֹת, *थिओलोजिकल डिक्शनरी आफ़ ओल्ड टेस्टामेंट*, ट्रांस. जॉन टी. विलिस, एड. जी. जोहांस बौटरवैक एंड हेल्मेर रिन्ग्रे (ग्रैंड रैपिड्स, मिक.: विलियम एरडमंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1974), 1:177.

[11]खतना किये हुए सीरियाई योद्धाओं का उल्लेख तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व के आरम्भ से पाया जाता है। (जैक. एम. सैसौन, "सरकमसीसन इन दी ऐनशियंट नियर ईस्ट," *जर्नल आफ़ बिब्लिकल लिट्रेचर* 85, नंबर 4 [दिसंबर 1966]: 475-76.) मिस्रीयों के खतने का उल्लेख 2300 ई.पू. से पाया जाता है. (जॉन A. विल्सन, ट्रांस., "सरकमसीसन इन इजिप्ट," इन *एनशियंट नियर ईस्ट टेक्स्टत रीलेटिंग टू दा ओल्ड टेस्टामेंट*, एड. जेम्स बी. प्रिटचारड [प्रिंसटन, एन.जे.: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1969], 326.) [12]जॉन टी. विल्स, *उत्पत्ति*, द लिविंग वर्ड कमेन्ट्री (ऑस्टिन, टेक्स.: स्वीट पब्लिशिंग कम्पनी, 1979), 181. क्रिया "आरम्भ" חָלַל (*chalal, खलल*); से निकला है, इसके बहुत से और प्रकार भी 4:26; 6:1; 11:6: "आरम्भ" ही अनुवाद किय गए है। NIV भी 9:20 को इसी तरह से अनुवाद करता है: नूह, मिटटी से बनाया गया व्यक्ति, दाख की बारी लगाता है. [13]जोन डी., लेवेनसन, "उत्पत्ति," *ज्यूइश स्टडी बाइबल*, एड. अदेले बर्लिन एंड मार्क ज्वी ब्रेटलर (न्यू यॉर्क: आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2004), 25. [14]फिर भी, ये बहुत रूचिदायक है कि पुरातत्त्ववेत्ता ने बहुत पहले दाख मधु बनाने के स्थान के विषय में खोज किया जो अर्मेनिआ की गुफा थी, ये वही स्थान है जहाँ नूह का जहाज़ ठहरा था। (http://news.nationalgeographic.com/news/2011/01/110111-oldest-winepress-making-winery-armenia-science-ucla/; Internet; accessed 20 December, 2013.) बेबीलोन परंपरा के अनुसार, शराब का उत्पादन महा जल प्रलय के पहले से था। (*द एपिक ऑफ़ गिलगामेश* 11.72-73.) [15]एच. सी. लिउपोल्ड, *एक्सपोजिशन आफ़ जेनेसिस*, वॉल्यूम 1 (एन.पी.: वार्टबर्ग प्रेस, 1942; दूसरा संस्करण, ग्रैंड रैपिड्स, मिक.: बेकर बुक हाउस, 1953),

345. [16]एफ. ब्रेंट क्न्युस्टों, "नेकेड," *इंटरनेशनल स्टैण्डर्ड बाइबल एनसैक्लोपिडिया* में, रेव्य. एड., एड. जिओफ्रे डब्लू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिक.: डब्लू. एम् बी. अर्डमेंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1986), 3:480. प्रकाशितवाक्य 16:15 पर टिप्पणी करते हुए, क्न्युस्टों ने कहा "वस्त्र धारण किये हुए जगी हुई अवस्था में रहना, सोयी हुए नग्न अवस्था में रहने के असंगत है।" [17]लिउपोल्ड, 346. [18]*द टेल ऑफ अखत* A.1.32-33 [19]विल्स, 183. नूह का श्राप उन सात राष्ट्रों पर पड़ा जो कनान के वंश के थे; जब यहोशु और इस्राएलियों ने कनान पर चढ़ाई की तब यही दुष्ट लोग उस पर कब्ज़ा किये हुए थे (व्यव. 7:1-11)। श्राप का असर, हाम के अन्य वंशज जैसे की वे जो अफ्रिका (देखें भजन 105:23; 106:21, 22)। में बस गए थे, उनपर नहीं पड़ा। ऐतिहासिक रूप में कुछ लोग अफ्रिका के वन्शंजों के दमन और और किये गए गलत व्यवहार के न्यायसंगत मानते हुए उत्पत्ति 9:25 का दुरूपयोग करते है। [20]15:16 के अनुसार, कनान के रहने वाले अमोरी कहलाते थे, जो उनलोगों के लिए इस्तेमाल होता है जिन्हें इस्राएलियों ने प्रतिज्ञा के देश से निकाल दिया था 15:16 में (न्यायियों 6:10; 1 शमूएल 7:14; 1 राजा 21:26; 2 राजा 21:11)।

[21]थिओफिलस गोल्डरिज पिंचेस और रोलैंड के. हैरिसन, "ज़ापेथ" *इंटरनेशनल स्टैण्डर्ड बाइबल एनसैक्लोपिडिया* में, रेव्य रेव्य. एड., एड. जिओफ्रे डब्लू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिक.: डब्लू. बी. अर्डमेंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1982), 2:967. [22]"तारागुम आफ़ ओन्केलोस," "Targum of Onkelos," *तारागुम ट्रांस* में. जे. डब्लू. एथेरिज (न्यूयार्क: के.टी.ए.वी. पब्लिशिंग हॉउस, 1968), 54. बुक आफ़ जुबली और बेबीलोनियन तल्मूड में भी इसी तारक के विचार पाए जाते है।" "शिक्यनाह" का अर्थ परमेश्वर की महिमा है। [23]फिलिप एस. अलेक्सजेंडर, "तारागुम, तारागुमीम," *एंकर बाइबल डिक्शनरी* में, 6:321. [24]क्लेटन जी. लिबोल्ट, "कैनन," *इंटरनेशनल स्टैण्डर्ड बाइबल एनसैक्लोपिडिया* में, रेव्य. एड., एड. जिओफ्रे डब्लू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिक.: डब्लू. बी. अर्डमेंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1979), 1:590. [25]*दी एपिक आफ़ गिल्गामेश* 11.193-94. [26]अध्याय 6:4 में, NASB के अनुसार वे "ख्याति वाले लोग" थे (अक्षरशः "नाम वाले लोग")। दूसरे शब्दों में, उन्होंने समाज के एक भाग में अपना नाम बनाया था, उनके नायक जो उनकी की सी बुरी चाल का अनुसरण करते थे। [27]"तलवार" के लिए जो यूनानी शब्द पौलुस इस्तेमाल करता है वह मक्यारा μάχαιρα (*machaira*) है, और वह उस जल्लाद तलवार की तरफ इशारा करता है (प्रेरितों 12:2) जो, "बुराई करने वालों को दंडित के अधिकारों की शक्ति है" (वाल्टर बाऊएर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लेक्सिकन आफ़ न्यू टेस्टामेंट एंड अर्ली चर्च लिट्रेचर*, तीसरा संस्करण, रेवरेंड. उर एड. फ्रेडेरिक विलियम डांकर [शिकागो: यूनिवर्सिटी आफ़ शिकागो प्रेस, 2000] 622)। [28]प्रका.13:1-10 का "पशु" रोमी साम्राज्य को दर्शाता है, और प्रकाशितवाक्य 13:11-18 में झूठे भविष्यवक्ता का विवरण है, वह शासक की आराधना के सम्प्रदाय (cult) का संकेत है। [29]फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राईवर, एंड चार्ल्स ए. ब्रिग्स, *ए हिब्रू एंड इंग्लिश लेक्सीकन आफ़ द ओल्ड टेस्टामेंट* (ऑक्सफ़ोर्ड: क्लारेनडन प्रेस., 1962), 761-63. [30]पौलुस कतई ये नहीं कहना चाहता था कि मसीहियों को उन सभी या हर प्रकार की चीज़ों से परहेज़ करना चाहिए जो अन्य मसीही भाइयों को पसंद न हो। वह उसकी बात कर रहा था जो उनकी और उनके आत्मिक जीवन के लिए "ठोकर का कारण" हो सकता था (रोमियों 14:13, 21)। जैसा की उसने अध्याय के आरम्भ में कहा था, "जिस के लिये मसीह मरा उस को तू अपने भोजन के द्वारा नाश न कर" (रोमियों 14:15)।

[31]अगर पौलुस इक्कीसवी सदी में रहता, तो अपने उपरोक्त कथन में अवश्य यह भी शामिल करता: "ऐसी कोई भी चीज़ का सेवन न करें जो गाड़ी चलते हुए आपके परख करने की क्षमता को बिगाड़े।" हर साल शराब पी कर गाड़ी चलाने वालों के कारण सड़क पर हज़ारों की संख्या में दुर्घटनाएं होती है। मसीहियों को ठहर कर मदिरापान और नशीले पेय पदार्थों के दुष्परिणामों के विषय गम्भीरता से विचार करना चाहिए।